शाश्वतधर्म

जनवरी १९९२

आ. श्री [illegible] ज्ञानमंदिर
श्री महावीर [illegible] केन्द्र, कोबा,
जि. गांधीनगर

मानव हुए जब उत्पथी सन्मार्ग निर्देशन किया,
मानव भूले निज आत्म शक्ति युक्ति से समझा दिया।
अन्धार था अज्ञान का फैला हुआ जगति यदा,
राजेन्द्र ने आकर सदा सद्ज्ञान प्रसराया तदा ॥

संपादक - जे. के. संघवी

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगमचंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कन्नाजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-घानेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल, बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नानचंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी, * श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतीलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणी-गुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भेंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई , सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल, कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा, * श्री विमलनाथ जैन डोसी दहेरासर - थराद.

1313

शाश्वतधर्म

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

संस्थापक - व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

संपादक : जे. के. संघवी

सहसंपादक : शांतिलाल सुराना

: संपर्क सूत्र :

☎ 5340724

शाश्वतधर्म कार्यालय,

जामली नाका, थाने - ४०० ६०१. (महाराष्ट्र)

सदस्यता शुल्क	
बीस वर्षीय	तीन सौ रूपये
पांच वर्षीय	एक सौ रूपये
वार्षिक	पच्चीस रूपये

विज्ञापन शुल्क (एकबार)	
पूरा पृष्ठ	३००/- रूपये
आधा पृष्ठ	१७५/- रूपये
पाव पृष्ठ	१००/- रूपये
अंतिम पृष्ठ	५००/- रूपये

(विशेषांक पर यह दर लागू नहीं है।)

वर्ष : ३९ ★ अंक ८ ★ जनवरी १९९२

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

जा. श्री हे... मुनि ... काम्पा,

श्री महावीर ...

जि. भावनगर

शाश्वत धर्म

जनवरी १९९२

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	जे. के. संघवी	३
निती द्वय शिक्षा पचीसी	गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरिजी	५
राजेन्द्र वचनामृत	संकलित	१२
श्रीमद् गुरुदेव की आत्मसाधना	आचार्य श्री जयन्तसेन सूरीजी	१३
गुरुजीवनी	मुनि श्री सम्यग् रत्न विजयजी	१५
जीवन–गाथा	श्री जगदीप डांगी	१७
सजकर समकित का श्रृंगार	श्री इन्द्रमलजी भगवानजी	१९
श्री शीतलनाथजी जिन–स्तवन (१०)	मुनि श्री जयानंदविजयजी	२१
क्या आप जानते हैं कि	संकलित	२४
आओ आम्रवृक्ष से कुछ सीखें!	मुनि श्री रत्नसेनविजयजी	२५
पशु और पर्यावरण	श्री पन्नालाल मुंधड़ा	२८
ज्ञान कसौटी (१०)	श्री महेन्द्र जे. संघवी	३१
शब्दसागर इनामी स्पर्धा (६)	साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी प्रदीप एम. जैन	३२
समाचार दर्शन		३५
अजन्माबालक नी नोंध पोथी	संकलित	४५
सुनन्दा (२)	पं. श्री पूर्णानंद विजयजी	४६

लेखक के विचारों से सम्पादक अथवा परिषद की सहमति आवश्यक नहीं है।

आवरण पृष्ठ – श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी प्रतिमा, श्री भांडवपुरतीर्थ (राजस्थान)

आचार्य श्री के संभावित कार्यक्रम

प. पू. आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी की निश्रा में चल रहे बाग (म. प्र.) में उपधान के बाद, पालीतणा यतीन्द्रभवन में नव्वाणुयात्रा का आयोजन होगा। वैसाख मास में सूरत (गुजरात) में प्रतिष्ठोत्सव होगा।

सम्पादकीय

दूर हटाये शिथिलाचारी : गुरु चरणों में जाऊँ बलिहारी

श्रमण भगवान महावीर द्वारा प्ररुपित धर्म मार्ग प्राणि मात्र के लिये श्रेयस्कर, कल्याणकारी एवं आत्मोन्नति के लिये प्रेरणादायी है । अविछिन्न रुप से चले आ रहे इस मार्ग पर चलकर अनेकानेक भव्यात्माओं ने आत्मशुद्धि की ओर कदम बढाया है ।

भगवान महावीर के पंचम गणधर श्री सुधर्मास्वामी की पट्ट परम्परा में ६८ वें पाट पर गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी हुए थे । जिन शासन प्रभावक एवं सत्यमार्ग के प्रचारक गुरुदेव का जन्म भरतपुर में संवत १८८३ पोष सुदी ७ एवं स्वर्गवास राजगढ़ (धार) म.प्र.में संवत १९६३ पोष सुदी ७ को हुआ था ।

शासन में व्याप्त शिथिलाचार एवं धार्मिक निरक्षरता के विरुद्ध एक रचनात्मक क्रांति का आपने सूत्रपात किया । कथनी और करनी में एकता उनके समय में निरंतर घट रही थी । उस समय जैन श्वेताम्बर संघ में यतियों का उत्पात सीमातीत हो गया था । ओघा और मुहपत्ती की आड़ में वासना, कामना और लालसा का पोषण हो रहा था । त्याग के मार्ग का पथिक मुनि आचार शैथिल्य के दुश्चक्र में फंस गया था । आपने दृढ संकल्प से शिथिलाचार के विरुद्ध शंखनाद किया । उन्होंने यतिक्रांति के लिये नौ सूत्री योजना घोषित कर नव कलमें यतियों द्वारा स्वीकार करवायीं और स्वयं के जीवन में उसे "संपूर्ण क्रियोद्धार" के रुप में लागू किया । स्वयं पालखी से उतरकर नीचे आये फिर यतियों को पालखी से उतरकर जीने की बात कही । जीवन पर्यंत निरतिचार उत्कृष्ट साध्वाचार का आपने पालन किया ।

समाज में फैली धार्मिक निरक्षरता को देखकर उन्होंने ज्ञान की ज्योति जलाई । छोटे-बड़े कुल मिलाकर इकसठ ग्रंथो की आपने रचना की ।श्री 'अभिधान राजेन्द्र' नामक विश्व कोश के सम्पादन एवं लेखन ने आपको विश्व पुरुष की श्रेणी में स्थान दे दिया है । यह एक ऐसा सन्दर्भ ग्रंथ है जिसमें श्रमण संस्कृति का एक भी संदर्भ शब्द छूटा नहीं है । बृहद् आकार के सात खंडो में ९२०० पृष्ठों में प्रकाशित यह ग्रंथ विद्वानों के इतिहास में अविस्मरणीय घटना बनकर रह गयी है । साठ वर्ष की उम्र में इसका लेखन प्रारंभ का करीब साढे चौदह वर्ष में इसका समापन किया। सारे संघ, समाज,शासन के कार्यों की जवाबदारी वहन करते हुए, ढलती उम्र में, उत्कृष्ट साध्वाचार की क्रियाऐं नखशिख अंगीकार करते हुए कोश का लेखन सचमुच ही आश्चर्यजनक कार्य था।

आज शासन में शिथिलाचार के बादल पुनः मंडरा रहे है । पिछले दिनों कुछ घटनायें अखबारों में भी प्रकाशित हुयी है । हमारे श्रमण संघ का आचार पालन, त्याग इस भौतिक युग में आज भी एक आश्चर्य के समान हैं । इन्हीं के तप एवं त्याग के बल पर शासन के महत्तर कार्य हो रहे हैं, किन्तु कुछ शिथिलाचारी वेषधारी साधुओं के क्रिया कलापों पर समय रहते रोक

नहीं लगी तो यह रोग बढ़ने में देर नहीं लगेगी । पूज्य आचार्य भगवंतो, समाज के अग्रगण्यों को शासन हित में इस ओर ध्यान देकर आवश्यक कदम उठाना चाहिये । पूज्य गुरुदेव के जन्म-स्वर्गारोहण दिवस पर आचार शुद्धि की प्रक्रिया पर यदि हम कोई योग्य निर्णय ले सकेंगे तो वह युग पुरुष को सार्थक श्रद्धांजली होगी ।

(जे. के. संघवी)

अखबारों से

● पी. टी. आई. टी. वी. एवं केन्द्रसरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के सहयोग से दूरदर्शन के लिए 'दी किलिंग फील्ड्स' नामक एक फिल्म बनाई गयी । उसमें रासायनिक कीटनाशकों से होने वाले नुकसान को प्रदर्शित किया गया था । १२ सितम्बर १९९१ को दूरदर्शन पर उसे दिखाना तय था, लेकिन ऐन वक्त पर कार्यक्रम निरस्त किया गया । फिर एक तारीख ऐसे समय निश्चित की गयी, जिस समय कम लोग टी.वी. देखते हों । उस समय भी दिखायी नहीं गयी । अब यह दिखायी जायेगी भी या नहीं , एक प्रश्न है । (जनसत्ता-बम्बई २७.१२.९१) - *रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों ने पर्यावरण को खूब दूषित करने के साथ ही भूमि की उर्वरा शक्ति क्रमशः नष्ट करती है । लेकिन रासायनिक कीटनाशी बनाने वाली कम्पनियाँ बड़ी ताकतवर हैं, वे नहीं चाहती कि लोगों को सही बात का पता चल जाए, इसलिए रहस्यमय ढंग से उसे रुकवाये हुए हैं ।*

● शाकाहारी दीर्घजीवी होते हैं - एक जर्मन सर्वेक्षण

"शाकाहारी मनुष्यों की उम्र, कुल जनसंख्या की उम्र के अनुपात से अधिक होती हैं, एवं ये अन्य की तुलना में बिमार भी कम पड़ते हैं । " यह सारांश निकाला है हीडेलबर्ग की जर्मन केंसर रीसर्च सेन्टर' की संशोधन टुकडी ने ।

इस संस्था ने लगभग ११ वर्षों के परीक्षण और सर्वेक्षण से इस तथ्य का पता लगाया है। यह सर्वेक्षण ८५८ शाकाहारी पुरुषों और १,०४६ महिलाओं को लेकर किया गया था, जिस दौरान १११ पुरुषों और ११४ महिलाओं की मृत्यु हो गयी थी । जबकि जर्मनी में मौत के आंकडे इससे दुगुने हैं ।

हृदय की बिमारी, रक्त-प्रवाह में रुकावट, केंसर जैसे महारोग भी शाकाहारियों में तुलनात्मक दृष्टि से बहुत कम होते हैं ।

शाकाहारियों के भोजन में चरबीयुक्त कम व रेशायुक्त खुराक अधिक होती हैं जो उन्हें ब्लड-प्रेशर, केलोस्टेरोल की अधिकता जैसी कई घातक बिमारियों से दूर रखती हैं ।

(जर्मन ट्रीबुन के आधार पर) (मुंबई समाचार दि. ६/९/९१ से साभार)

श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी द्वारा मरुधर भाषा में निर्मित –

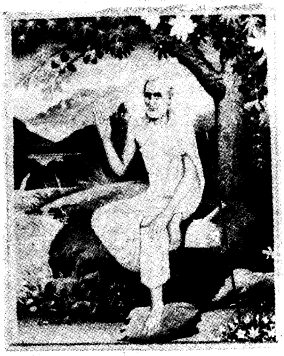

नीति शिक्षा–द्वय–पचीसी
[सूक्तिवचनमाला]

[विक्रम संवत १९५४ रत्नपुरी (रतलाम) में गुरुदेव श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी ने नीति शिक्षा द्वय की रचना मरूधर भाषा में की थी, आज भी वह उतनी ही प्रासंगिक है। पूज्य गुरुदेव की जन्म–स्वर्गारोहण तिथि के अवसर पर 'शाश्वतधर्म' के पाठकों के लिये इसे प्रकाशित कर रहे हैं। – सम्पादक]

(१) सत्पुरूषां को अपमान आछो पण नीचाँ री सोबत बुरी, घोडांरी लात लागणी अच्छी पण गद्धांरी सवारी करणी ठीक नहीं, सत्पुरुषांरा कडवा वचन सुणनां उत्तम पण नीच पुरुषांरा मधुर वचन पण उत्तम नहीं, ऐसो समझने नींच पुरुषां री संगत नहीं करणी चाहिजे।

(२) दूसरां ने जाल में नाखवा से आपणो हीज नुकसाण है, लौकिक कहवत है किं "खणेगा सो पड़ेगा बन्दा लड्डू खायगा," इण वास्ते दूजां ने कपट–जाल में फंसावा री बुद्धि नहीं राखणी चाहिजे और न कोईरो बुरो चिन्तवणों चाहिजे।

(३) कागला में पवित्रतां, जुआरी में सत्यता, सर्प में क्षमा, स्त्री में कामोपशान्ति, कायर में धैर्य, मद्य पीवावाला में तत्व री चिन्ता, ज्यों असंभव है, त्यों मनःशुद्धि हुआ बिनां धार्मिक लाभ मिलणो असंभव है और निन्दक री सद्गति होणी पण असंभव है।

(४) कष्ट रा समय में मित्र री, रण संग्राम में शूरवीर री, दुष्काल रा समय में दानीरी, निर्धन अवस्था में स्त्री री परीक्षा होवे है, तथा सेवक और शिष्य री परीक्षा विनय करवा रा अवसर में होवे है।

(५) स्त्रि रो वियोग, स्वजनां से अपमान, माथेरो ऋण, कृपणरी सेवा, निर्धन अवस्था में स्वजन मिलाप, ये पाँच बातां बिना अग्नि शरीर ने जलावे है।

(६) लोभी पुरूष गुरु ने, बन्धुओं ने नहीं गिणे, कामी पुरुष भय अने लज्जा ने नहीं गिणे, विद्यातुर सुख और निद्रा ने नहीं गिणे और क्षुधातुर वेला के कुवेला ने नहीं गिणे।

(७) सद्गुण प्राप्त करवा रो उद्यम नित्य करणो चाहिजे, कारण के सद्गुणां से ही मनुष्यरी योग्यता बढे है और सद्गुणां रा प्रभाव से ही सब सुख सहज ही में मिले है।

(८) उत्तम पुरुष पोता रा गुणां से ही ज प्रसिद्ध होवे है, मध्यम पुरुष पिता रा नाम सुं, अधम पुरुष मामा रा नाम सुं और अधमाधम पुरुष सुसरा रा नामसु प्रसिद्ध होवे है। अतएव प्रत्येक मनुष्य ने पोता रा गुणां से ही प्रख्यात होवा री खप राखणी।

(९) परोपकार करणो, प्रिय वचन बोलणो, सबरे साथ हार्दिक स्नेहभाव राखणो, दूजा री निन्दा से दूर रहणो, यह चार बातां सत्पुरुषां में स्वाभाविक होवे है। चन्द्रमा ताप ने, कल्पतरु दीनता ने और

जल उष्णता ने दूर करे है, पण सज्जन पुरुषां री संगति पाप, ताप, दीनता और उष्णता इण चारां ने दूर करे है।

(१०) जितेन्द्रियपणो विनयरो कारण है अर्थात् विनय गुणरी उत्पत्ति जितेन्द्रियपणां से होवे है। विनयगुण से सगलाइ सद्गुण प्रकाशित होवे है। अधिक गुणवान पुरुष ऊपर लोग प्रेमभाव राखे है और लोकप्रियता सु अनेक सम्पत्तियां प्राप्त होवे है। जिणसु जितेन्द्रिय होवारी खप नित्य राखणी चाहिजे।

(११) धर्मरा प्रभाव सुं भोग–सामग्री; सुखसम्पदा, स्वर्ग और मोक्ष लक्ष्मी प्राप्त होवे है। दुनिया में अनुभवगत जितरा दुःख है वे अधर्म सुंप्राप्त होवे है। ऐसो जाणने बुद्धिमान और हितरी इच्छावाला पुरुषां ने धर्म सेवन करवारी खप राखणी चाहिजे।

(१२) जिके पदार्थ आज दीसे है तिके काल रहेगा कि नहीं? इणरो कांई निश्चय नहीं, विनाश होतां कांई देर नहीं लागे। अस्थिर, अनित्य और विनाशी संजोगां ऊपर ममता (मोह) रखनी व्यर्थ है। जल तरङ्ग समान लक्ष्मी, पतङ्गरङ्ग समान युवावस्था, शरदऋतु सम्बन्धि बादला रे समान आयुष्य है, इस्यो जाणने धर्मरी आराधना भली प्रकार करनी चाहिजे।

(१३) अति दुष्प्राप्य–मनुष्य जन्म पामने स्व–पर हितकार्य शीघ्र कर लेणा चाहिये, कारण के गई वखत पाछी मिलणी कठिन है। समय गयां पछे "लग्न वेला गई ऊंघ मां, पछी घणो पछताय" यो न्याय हो जावेला, इण सुं धर्म करवा में ढील कामरी नहीं।

(१४) जिण समय में जो काम करयो जाय उण समय में उण कार्यरो ध्यान ही रखणो चाहिजे। जिके मनुष्य एक काम करवारे समय दूजा काम करवा में मन लगावे उणारी काम सिद्धि में वाधा पड जावे है, कारण के सिद्धि रो अधिकांश एकाग्रता ऊपर निर्भर रेवे है। इण वास्ते नियत समय नियत कार्य हीज करणो चाहिजे।

(१५) बिना प्रयोजन कोई काम में प्रवृत्त होणो ठीक नहीं, कारण के इसा काम में लाभ रो प्रभाव है। जिको पुरुष उद्देश्य स्थिर करने उण में प्रवृत्त होवे है और नित्य बराबर उद्योग करतो रेवे है उणरो उद्देश्य निश्चय से सिद्ध होवे है।

(१६) प्रशंसा री अभिलाषा राखणे से प्रशंसा नहीं होवे पण प्रशंसा रे लायक काम से प्रशंसा होवे है इण वास्ते दुनिया में प्रशंसारी इच्छा होय तो भलाईरा काम करता रहना चाहिजे जिण सु लोग खुद प्रशंसा करवा लाग जावेगा।

(१७) साहस, सहिष्णुता, गुणानुराग और उच्चाभिलाषा ये चार गुण उन्नतिरा स्तंभ है, इण थांबा पर हीज उन्नतिरी इमारत खडी है, जिणसु पोतारी उन्नतिरी चाहनावाला पुरुषां ने उक्त गुणांरी सावधानी से सुरक्षा करवा खप करनी चाहिजे।

(१८) उत्तम सुभाषित सुन्वा से कानांरी शोभा है, कुण्डल धारण करवा से नहीं; दान देवा से हाथांरी शोभा बढे है, कंकण पहरवा से नहीं; दूजांरी भलाई करवा से शरीररी शोभा होवे है, चन्दन आदि सुगन्धित वस्तुआँ लगावा से नहीं।

(१९) जिके पुरुष कठोर वचन नहीं बोले, निरन्तर मीठा वचन बोलवारो अभ्यास राखे, पोतारी सिवाय दूसरारी नारी ने खोटी वासनारी दृष्टि से नहीं देखे, कोईरी निन्दा नहीं करे वे सज्जनां मे गिण्या जावे है इसा

पुरुषां से समाजरी शोभा बढे।

(२०) संप पूर्वक काम करवा से पुरुषांरी उन्नति होवे है, जिणां में सम्प नहीं वणांरो काम बिगडतां देर नहीं लागे, निर्बलांरो समुदाय पण सम्प से मोटा मोटांरो पराजय कर लेवे है, फूट में कामरी सिद्धि होनी अत्यन्त कठिन है। लौकिक कहवत है कि ''फूट त्यां टूट सम्प त्यां जम्प'' इण वास्ते सम्प राखवारो प्रयत्न करताँ रहनो चाहिजे।

(२१) जिन समय में जिण सुक्षेत्र में न्यूनता होय विण क्षेत्र में धन वापरवारो अधिक लाभ है। जिके पुरुष क्षेत्ररी योग्यता देख्यां बिना धन खर्च करे है विणां ने वास्तविक लाभ मिलनो कठिन है।

(२२) उत्तम बुद्धि, अच्छो कुल, इन्दियांरो रोकणो, शास्त्रांरो अभ्यास, थोड़ो बोलणो और यथा शक्ति दान देणो तथा कियोड़ा उपकार ने मानणां इण आठ गुणा से पुरुषांरी घणी शोभा बढे है।

(२३) ईर्ष्या करवावालो, घृणा करवावालो, असन्तुष्ट रहवावालो क्रोध करवावालो, दूजारे आसरे रेवावालो और नित्यं दुःख में डूबोड़ो, इतरा ने सदा दुःखरो अनुभव हुआ करे है।

(२४) वा सभा कणीं कामरी नहीं जिण में विद्वान मनुष्य नहीं होवे, वो विद्वान किण कामरो जिको धर्मरो उपदेश नहीं देवे, वो धर्म किण कामरो जिण में सत्य नहीं होवे और वो सत्य किण कामरो जिण में छल कपट रह्यो थको होवे।

(२५) जिको विपत्ति आयां किवारेइ दुःख धारण नहीं करे, आलस्य ने छोड़ उद्यम करतो रहे, समय आयां दुःख ने सहन करे, वो ही पुरुष महात्मा, धुरन्धर, वीर और शत्रुआं ने जीतवावालो जाणणो चाहिजे।

★ ★ ★

(१) संसार रूपी समुद्रं में जन्म मरण रूपी अगाध जल है, काम रूपी कीचड है, तृष्णारूपी खाडा है, अभिमान रूपी तरङ्गाँ है, मनुष्य रूपी मगरमच्छ है, कुटुम्बीजन रूपी मछलियाँदि छोटा–छोटा जानवर है, इण में आठ कर्म रूपी चट्टानाँ है, मायाचारी रूपी भमरियां है, लोभ लालच रूपी कांजी है, क्रोध रूपी बड़वानल अग्नि है, चतुर्विध सङ्घ रूपी महामूला रत्न है और मोक्ष रूपी इणरी तट है। जो पुरुष स्त्री सुगुरु, सुदेव, सुधर्म ऊपर अतुल विश्वास राखने वितराग धर्मरो भली रीते पालन कर लेवे है वो संसार समुद्ररा किनारे पहुँच ने अक्षय मोक्ष सुख प्राप्त कर लेवे है।

(२) जीव मात्ररा कल्याणरी कामना राखणी, दैनिक व्यवहार में सचावट राखणी, तस्करवृत्ति तथा व्यभिचारवृत्ति से अलग रहणो, सुखी अवस्थारो अभिमान नहीं राखणो; दूजांरा दुःखां ने मिटावारीं भावना राखनी; इस्या आदम्यां ने सर्वश्रेष्ठ और नमस्कार योग्य समझना चाहिये।

(३) दुष्ट मनखांरो बल हिंसा है, भूपालांरो बल दण्ड देणो या कानून है, स्त्रियाँरो बल सेवा–सुश्रुषा करनी है तथा सज्जन पुरुषांरो बल सहनशीलता है। जिणा आदमीरी प्रसन्नता से कुछ लाभ नहीं व अप्रसन्नता से कुछ हानि नहीं इस्या मनुष्यांरो जमारो नपुंसकरी स्त्रीरा सिणगार ज्युं निकम्मो जाणणो। इस्यो आदमी मनुष्य कहलावा लायक नहीं।

(४) पोतारा कामांने बिगडवा देवे ने दूजारा काम करवा धाय, समर्थ छतां मित्र,

स्वजनां ने सहाय न करे पण दूजारो सहायक बने, काम ने उतावल से कर गुजरे, हानि लाभरो विचार न करे, निर्धन छताँ ऊंचाऊंचा **काम करवारी** वांछा करे, खोटा धंधा रोजगार करने पईसो पैदा करे पण धर्म ध्यानरो लक्ष नहीं राखे। पोतारे करवा लायक काम दूजा से वा नोकरां से करावे तथा पोतारी शक्ति पर अविश्वास राखे, इस्या मनखांने महामूढ जाणणा चाहिजे।

(५) संसार में इण शरीर ने नाश करवा वाला दो बडा तीखा कांटा है, एक तो अप्राप्य वस्तु ने प्राप्त करवारी कामना, दूजा सर्व रीते असमर्थ छतां गुस्सो करणो, ये कांटा एक पछी एक दुःखरी घनघटा लावावाला मोटा रोग समान है।

(६) शक्ति छतां कोईरो उपकार नहीं करणो, छता धन सुकृत काम में खर्च नहीं करणो, बल पराक्रम छतां तपस्या, व्रत पच्चक्खाण नहीं करणा और हरएक काम करतां जीवांरी यतना नहीं राखणी। इस्या मनखांरो जीवन दुनिया में मृतवत् जाणणो चाहिजे।

(७) अधिक सोणा; खामोश न करणा; आलस्य रखणा, चिन्ता फिकर में निमग्न रहणा, अहंकार राखणो, भैभीत होणो, चुगलखोरी व निन्दाखोरी, पोतारी प्रतिष्ठारी जिज्ञासा राखवावाला आदमियां ने ये ८ बातां सर्वथा छोड देणी चाहिजे तथा सत्य भाषण, सहनशीलता; उदारता और धैर्यता यह चार बातां हृदयभवन में धारण करणी चाहिजे।

(८) असावधान तथा बेमीला लोगां से चोर गुण्डारी, व्याधिग्रस्त लोगां से वैद्यांरी, कामी मनखां से स्त्रियांरी, यजमानां से पुरोहित ज्योतिषियांरी और मूर्ख लोगां से धूर्त पण्डितांरी आजीविका चाले है। मायाचारी, ठगबाजीं तथा प्रपञ्चजाल रच कर ये लोगां से पैसा पड़ाय लेवे है, इणारो विश्वास करणो ठीक नहीं।

(९) विद्याभ्यास कीदा पछे शिष्य गुरुरो, विवाह हुआं पछे पुत्र माता–पितारो, विषयवासना पूरी हुआ पछे पुरुष स्त्रीरों, काम सिद्ध हुआ पछे प्रयोजनरो, नदी पार कीदां पछे नावरो और व्याधि मिटियां पछे वैद्यरो उपकार लोग भूल जावे है। इसी रीते सुख मल्यां पछे लोग प्रभुरो नाम रटना पण भूल जावे है। कहावत पण है कि –

''रूठा गावे राम ने, तूठा गावे और''

(१०) जिण पुरुषरा पूर्व भवरा संस्कार आछा होवे उणने मनखावतार, जैन धर्म, ज्ञान–दर्शन चरित्र रूप त्रिरत्न और परोपकार बुद्धि, इण चार अमूल्य वस्तुआंरी प्राप्ति सुलभ होवे है। इण से जो धर्म करवारो उद्यम करता रहेला वो आगला भव में सुख सम्पत्ति पामेगा। धर्मरी साधना सबसे मोटी वस्तु है। महर्षियों रो पण कहणो है के –

धरम करत संसार सुख,
धरम करत निरवान।
धर्म पन्थ साधे बिना,
नर तिर्यंच समान॥

(११) मनखाँ ने आयु अल्प मिल्यो है; उण में बालपण तो खेल कूद में चाल्यो जावे, तरुणापण खावा, पीवा, कमावा और एश आराम में बीत जावे, वृद्धापन में शरीर, इन्द्रियां, रूप, तेज, उठणा, बैठणा सब पराधीन हो जावे और चारी तरफरी हाय बलाय करवा में जीव पड जावे है, जिण से कुछ नहीं हो सके, पछे कूच करवारी तैयारी हो जावे है। इण वास्ते कुछ पुण्य उपार्जन कर लियो तो वो साथे आवेला,

या बात खचीत समझ लेणी चाहिजे।

(१२) उत्तम कुल, शास्त्र श्रवण रुचि, जैन धर्म, विशुद्ध बुद्धि, लम्बो आयुष्य, स्थिर लक्ष्मी, निरोग शरीर, निर्मल यशःकीर्ति, सद्गुरु संयोग, धार्मिक प्रेम और धर्मानुष्ठानां में प्रवृत्ति; इतरी बातां पूर्व भव में कियोडी पुण्याई बिना नहीं मिल सके। सुकृत करणीरी सामग्री मलवा छता जो उण ने नहीं आचरे तो फिर योग मिलणो दुर्लभ है।

(१३) दीन हीन दुखी जीवाँरी सेवा, स्वधर्मी भायांरी भक्ति, वीतराग प्रभुरो स्मरण, दृढता से समकितरो पालण, सत्य संभाषण, त्याग वृत्ति संतोष धारण, खल पुरुषांरी सोबतरो त्याग, परगुणानुराग और गुरु आज्ञारो पालण। इतरी बातां ने आचरण करवा से मनुष्य जीवनरी उत्तरोत्तर प्रगति होवे है।

(१४) मधुर प्रिय वचन, सुपात्रदान, गुणानुराग, सबरा साथे प्रेम, सत्यता ने नम्रतारो व्यवहार, विनय करणो, संसार में इणारे समान दूसरो कोई वशीकरण मंत्र नहीं है। जो सब लोगां ने वश करवारी अभिलाषा होवे तो ऊपर लिखि बातां ने हृदयङ्गम कर लेणी चाहिजे। इणा छे बातां से ही मनुष्य आदर्शरी कोटि में पेठीने सब लोगांरो समादरणीय बणे है, या बात निश्चित जाणणो।

(१५) गरीब लोगाँ में शक्ति अगाध है। जिण तरेसे बोकड़ारी खाल में लोखण्ड भस्म हो जावे है, उणी तरे गरीब लोगाँरी आह कदी निष्फल नहीं होवे। गरीब जो एक सूत्र में सुत्रिय होय ने अगर पहाडाँ ने खोद कर फेंकणो चावे तो फेंक देवे। अमीरां रा सारा काम गरीबाँ से ही सफल होवे है इण वास्ते गरीबांरो अनादर कदी नहीं करणो, उणा से काम करावणो होय तो प्रेम, मीठास तथा आदररो उपयोग करणो चाहिजे।

(१६) जिण काम ने करणो धार्यो होय उणने तत्काल कर लेणो चाहिजे, समयरी प्रतिक्षा करणी आछी नहीं। जिका लोग आज नहीं दो चार दिन में कर लेवांगा, इसी विचारणा करता रेवे है पण कालरो कई भरोसो है नहीं "कर लियो सो काम, भज लियो सो राम" वाली कहेवत मुजब जो काम कर लियो जाय तो पूरो हो जावे। कवि लोगांरो पण कहणो है के –

काल करे सो आज कर,
आज करे सो अब्ब।
पल पल बीती जात है;
फेर करेगा कब्ब॥

(१७) संसार में बोल बोल रो पटत रो है 'एके बोले कोटि गुण; एके बोले कोटि विनाश' एक बोली से करोडां मनखां में शान्ति फेल जावे और एक बोली से करोडां आदमियांरा हिरदा में आग भभक उठे। इण वास्ते बोलवारो विवेक राखणो, वो पण सत्य, मधुर ने प्रमाणबद्ध कारण सर ही बोलणो। सोना ने चांदीरी घुघरीयाँ अधिक बकोर करवा से पगांरी ठोकरां खावे तथा मौन पणासे भोडलरी टीकीं ललाट पे शोभा पावे। बोली बीलीरो यो ही पटंतरो समझणो चाहिजे।

(१८) दुष्ट स्वभाववाला पुरुषां में शान्ति, प्रिय वादिता, जीतेन्द्रियता, आत्मज्ञान, साधुता, त्याग, उदारता, प्रतिज्ञापालन; धर्म रक्षा; कुलीनता; वचन कुशलता; पराक्रम; कृतज्ञता तथा दक्षता इन १४ वातांरो सर्वथा अभाव होवे है। इसी से वे चोराशी लाख योनियों में बार

बार अठे उठे भटकता रेवे पण उणाने कठेइ शातारो ठिकाणो नहीं मिले। इणारी बुद्धि कटुभाषी, परवंचक तथा पर कार्य नाशक होवण से दुनिया में आछो स्थान कदी नहीं पा सके। पोतारी उन्नतिरा इच्छुक लोगां ने पोतारो दुष्ट स्वभाव छोडी ने उत्तम स्वभाव राखणो चाहिजे।

(१९) विशुद्ध स्वभाव राख्या बिना चाहे जितरो धरम, चाहे जितरो तप और चाहे जितरा पूजा पाठ करो, एक पण लेखे लागे नहीं। खोटा स्वभावरा कारण से अति छोटो शरीर धारी तन्दुलियो मच्छ अन्तर मुहुर्त में मरीने सातमी नरक में जायने डेरो लगावे है। इण कारण मनुष्य मात्र ने खोटो स्वभाव सर्वथा छोड देणो चाहिजे तदेज उणरा कर्या पूजा, पाठ, जप, तप, धरम आदि सुकृत करणी सफल होवेगा।

(२०) लोगाँरा घरां में आग लगावणी, कोई विष खवावणो, मेहनत कर्या बिना हरामरो खावणो, नशो ने नशारी चीजांरो धंधो करणो, शस्त्रास्त्र रो वेपार करणो, ज्योतिषीने विद्वान बणवारो ढोंग रचणो, परस्त्रीगमन ने अपहरण करणो, मित्र द्रोह ने कुटुम्ब द्रोह करणो, गुरुदेवादिरा आसण पर बैठणोने उणारे पगलगाणो, गुप्त रूप से मदिरादि वापरणा, अति क्रोध करणो ने थोबड़ो चढायाँ राखणो, दुखी जीवां ने सतावणा, धरमरी निन्दा करणी, डाको डालणो–डलावणो; ठगबाजी करने धन हरण करणो, शरणागत साथे विश्वास घात करणो। नीतिकारों ने ये १७ हत्यारा बतलाया है, इणारी कदी सद्गति होवे नहीं। इणारो सम्पर्क साधणो के इणारो विश्वास करणो मनखां ने दुर्गति और महा विपत्ति में डालवावालो जाणनो चाहिजे।

(२१) प्रभुवाणीमय सूत्रां ने श्रवण करवा से सारा ने खोटा मार्गरो जाणपणो आवे है, जीं से आत्मा खोटा मार्ग ने छोडी कल्याणकारी मार्ग ने आचरे। जिन वचन सुण्यां सिवाय सारा नरसा मार्गरी ओलखाण नहीं होवे ने आत्मा पोतारी प्रगति पण नहीं कर सके। दुनियां में मतमतान्तर, गच्छ गच्छान्तर, घणा चाल रह्या है, उण में रहीने पण सांचा खोटारी परख शास्त्राधार से करीने साँचा मार्ग ने पकड लेवा से आत्मारो उद्धार होय सके, अन्यथा नहीं कयो भी है कि –

सांची बातां शास्त्ररी,
झूठ है ताणा ताण।
बुद्धिबल से विचारणो,
होसी आत्म कल्याण।।

(२२) सर्व दोष रहित अरिहन्त भगवानरो हमेशा नाम स्मरण करणो, कञ्चन–कामिनीरा त्यागी, आरम्भ; परिग्रह रहित गुरु ने सदा नमन सेवन करना और अहिंसामय जिन भाषित धर्म रो नित्य परिपालन करणो। इणा तत्वत्रय ने आत्म विश्वास राख ने धारण करणा यो मुक्ति मार्ग है। जो पुरुष तथा स्त्री इणां तीन तत्वां ऊपर अटूट श्रद्धा राखे वो मोक्ष सुख ने जल्दी से प्राप्त कर सके। कहावत भी है कि –

अरिहन्तदेव के जपो, सेवो गुरु निर्ग्रन्थ।
पालो धर्म दयामयी, यो है मुक्तिरो पन्थ।।

(२३) पोत पोतारी कृत करणीरा प्रभाव से कदी उन्नत होणो, कदी पूंजीपति होणो, कदीं रङ्कपति तो कदि आदरणीय होणो, कदि तिरस्करणीय बणणो, कदि लाभ पामणो तो कदि हानि उठावणी, इण रीते संसार में हर एक प्राणीरा ऊपरे परिवर्तनरो

चक्र फिर्यां करे है। इण चक्र से कोई पण प्राणी छुटकारो पाय सके नहीं। वलिहारी उण पुरुषांरी है जो परिवर्तनरा चक्र में सपड़ाया थका पण पोतारा धर्म मार्ग ने कदी छोड़े नहीं ने दृढता से धर्म निभाता रहे।

(२४) कोई भी काम सगा सम्बन्धियांरी सम्मति मिलाय ने करणो पण पोतारी मति से करणो अच्छो नहीं। कदास कामरी रूप रेखा बिगड जाय तो लोकांरा ओलंबा का उपहास्य सहन करना पड़े जिण से आत्मा पश्चाताप में पड़े। लोकांरी उक्ति पण है के 'पाणी आयां पेली पाल बांधणी' इण से कोई सो काम करणो पड़े तो पहलां खूब सोच विचार से करणो।

(२५) जमानारा परिवर्तन साथे रीत रिवाज, धंधा रोजगार ने वेश भूषारो पलटो होई सके, परन्तु शिष्टाचार्य समाचरित धरम मर्यादारो कदि पलटो होई सके नहीं। धरम मर्यादारो पलटो करवा से शास्त्राज्ञा भङ्गरो दोष लागे है, जींरो परिणाम सुन्दर नहीं। आत्म कल्याणरा साधनभूत विधान प्रभु–स्मरण, पूजा, पाठ, तपस्या, सामायिक, प्रतिक्रमण विगेरे धर्मानुष्ठान है, यांरो परिवर्तन करणो आत्म साधनरो घात करवा बराबर है।

रत्नपुरी थिरबास में,
उगणी चोपन साल।
कृति या मरुघर बोलिमें,
सूक्त वचनरी माल॥
सूरिराजेन्द्ररी सीखडी;
धरलो मनरा मांय।
आदर मान बढे घणो;
मिले मार्ग सुखदाय॥

शाकाहार सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी के लिये
अपने घर अवश्य मंगवायें

'शाकाहार क्रांति'

(आहार क्रांति की दिशा में प्रवृत्त लोकप्रिय मासिक)

सम्पादक - डॉ. नेमीचन्द जैन
वार्षिक शुल्क : पच्चीस रुपये
आजीवन शुल्क : एक सौ पच्चीस रुपये

संपर्क सूत्र
हीरा भैया प्रकाशन, ६५ पत्रकार कॉलोनी, कनाड़िया मार्ग,
इन्दौर (म.प्र.)

श्रीराजेन्द्र वचनामृत

विविध सांसारिक वेशों को चुपचाप देखते रहो, परन्तु किसी के साथ राग द्वेष मत करो। समभाव में निमग्न रहकर अपनी निजता में लीन रहो, यही मार्ग तुम्हें मोक्षाधिकारी बनायेगा।

पुण्य और पाप दोनों क्रमशः सोने और लोहे की बेड़ियाँ है। मुमुक्षुओं के लिए दोनों बाधक हैं। ज्ञानी पुरुष अपने अनुभव द्वारा दोनों निःशेष करने में सदैव प्रयत्नवान रहता है।

कल्याणकारी वाणी बोलना, चंचल इन्द्रि यों का दमन करना, संयम-भाव में लीन रहना, आपत्ति आ पड़ने पर भी अविकल रहना, अपने कर्तव्य का पालन करना, और सर्वत्र समभाव बरतना–इन गुणों का धारक श्री साधु, श्रमण या मुनि कहलाता है।

धन चला जाए तो कुछ नहीं जाता, स्वास्थ्य चला जाए तो कुछ चला गया समझो, लेकिन जिसकी आबरू-इज्जत चली जाए, चरित्र ही नष्ट हो जाए तो उसका सब कुछ नष्ट हो गया यही समझना चाहिये; अतः पुरुष और स्त्री का सच्चरित्र होना अत्यन्त आवश्यक है।

जो व्यक्ति व्याख्यान देने में दक्ष हो, प्रतिभा सपन्न हो, कुशाग्र बुद्धिवाला हो; किन्तु मान प्रतिष्ठा का लोलुपी हो, दूसरों को नीचा दिखाने का प्रयन्त करता हो तो न तो वह वाग्मी है न प्रतिभावान और न विद्वान्।

आगे बढ़ना पुरुषार्थ पर चढ़ने का अधिकारी नहीं है उसे अन्ततोगत्वा गिरना ही पड़ता है।

जन-मन-रंजनकारी प्रज्ञा को आत्म प्रगतिरोधक ही समझना चाहिये; जिस प्रज्ञा में उत्सूत्र, मायाचारी और असत्य भाषण भरा रहता है, वह दुर्गतिप्रदायक है। अतः आत्मप्रशंसा का यत्न यथार्थ का प्रबोधक नहीं, अधमता का द्योतक है।

मानव में मनुजता का प्रकाश सत्य , शोर्य, उदारता, संयम आदि गुणो से ही होता है। जिसमें गुण नहीं उसमें मानवता नहीं, अन्धकार मनुजता का संहारक है, वह प्राणिमात्र को संसार में धकेलता है।

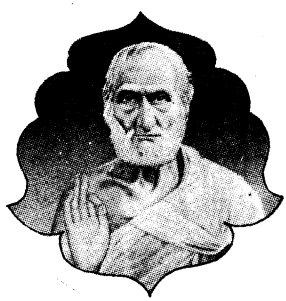

जिनेश्वर वाणी अनेकान्तमय है। वह संयम-मार्ग की समर्थिका है। वह सब तरह से तीनों काल में सत्य है और असत् तर्क-वितर्कों के लिए लेशमात्र भी स्थान नही है।

जिस प्रकार सघन मेघ-घटाओं से सूर्य-तेज दब नहीं सकता, उसी प्रकार मिथ्या प्रलापों से सत्य आच्छादित नहीं हो सकता।

श्रीमद् गुरुदेव की आत्मसाधना

आचार्यश्री जयंतसेनसूरिजी

दशवैकालिक सूत्र के द्वितीय अध्ययन में कहा है —

आयावयाही चयसोगमल्लं, कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं।
छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए।।

हे साधुओं! यदि सांसारिक दुःखो से छुटकारा पाना हो, तो आतापना लो, सुकुमारिता को छोड़ो, चित्त से विषय वासनाओं को हटा दो, वैर-विरोध और प्रेम-राग को अलग कर दो। इस प्रकार की साधना करते रहने से सर्व दुःखों का अन्त हो कर अक्षय सुख प्राप्त होगा।

इसी प्रकार दशवैकालिक सुत्र के तीसरे अध्ययन में भी कहा है —

आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवाउडा।
वासासु पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिआ।।

जो साधु ग्रीष्मकाल में आतापना लेते हैं, शीतकाल में उघाड़े शरीर तालाब या जंगल के किनारे खड़े रहकर कायोत्सर्ग करते हैं और वर्षाकाल में स्थिरवास करके विविध तपस्या और स्वाध्याय ध्यान से इन्द्रियों का दमन करते हैं, वे साधु अपने संयम धर्म एवं ज्ञानादि गुणों की भले प्रकार सुरक्षा कर सकते हैं।

प्रातःस्मरणीय गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजयराजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज ने क्रियोद्धार के पश्चात् ऐसे घोर अभिग्रह धारण किये, जिनकी पूर्ति में कभी कभी उन्हें चार छह या सात सात दिन तक भी निराहार रहना पड़ता था।

इसी प्रकार प्रति चातुर्मास में वे एकान्तर चौविहार उपवास, तीनों चौमासी चौदस का बेला, संवत्सरी और दिपावली (महावीर निर्वाण दिन) का तेला, बड़े कल्प का बेला, प्रतिमास की सुदि १० का एकासना, चैत्री और अश्विनी ओलियाँ (आयंबिल तप) किया करते थे।

इस प्रकार की तपस्या उन्होंने जीवन के अन्त तक की।

मांगीतुंगी पहाड़ के बीहड़ स्थानों में उन्होंने छह मास तक कार्यात्सर्ग में रहकर आठ आठ उपवास की तपस्या सहित सूरिमंत्र का जाप किया था। इसी प्रकार मारवाड़ में मोदरा ग्राम के समीप चामुण्ड वन में भी उन्होंने अट्ठाई की तपस्या पूर्वक खड़े खड़े ध्यान किया था।

श्रीमद् गुरुदेव कई दिनों तक उष्णकाल में आग के समान तपी हुई पर्वत की शिलाओं और नदी नालों की रेत पर आतापना लेते थे। शीतकाल में असह्य ठंड में वे नग्न शरीर नदी या तालाब के तट पर अथवा जंगल में वृक्षतले खड़े खड़े कायोत्सर्ग करते थे। वर्षाकाल में वे स्वाध्याय-ध्यान और तपस्या में निरत रहकर इन्द्रिय दमन करते थे। प्रतिदिन संध्या प्रतिक्रमण के अनन्तर रात में १२ से ३ बजे तक आसन लगा कर बिना किसी व्यग्रता के वे प्रभुध्यान में मग्न रहते थे।

सचमुच श्रीमद् का आत्मबल, तपश्चरण और समाधियोग बड़ा प्रबल और दृढ़ था। विरले लोग ही ऐसी आत्मसाधना कर सकते हैं। इस ध्यान समाधि में उन्हें भावी घटनाओं का विशद भान भी हो जाता था। अहमदाबाद की रतन पोल और कुक्षी में होनेवाला अग्निप्रकोप, इनका ज्ञान उन्हें ध्यान में पहले ही हो गया था।

उनकी साधना का यह प्रभाव था कि शेर जैसे हिंसक पशु भी उनके आगे नतमस्तक हो जाते थे। जालोर के स्वर्णगिरि पहाड़ पर जब वे ध्यान मग्न थे, तक एक शेर उन्हें नमन करके चला गया था।

गुरुदेव के समाधि ध्यान में किसी भाँति का दंभ नहीं था। इसी ध्यानबल से उन्हें भविष्य की घटनाएँ जानने की शक्ति प्राप्त हुई थी। उनमें उच्च स्तर का आत्मिक मनोबल था। इसी कारण उनकी सब बातें सत्य सिद्ध होती थीं। उनका ज्योतिष ज्ञान अनुभवजन्य था। उनके दिये हुए मुहूर्त में अच्छे से अच्छा ज्योतिषी भी दोष नहीं निकाल सकता था।

सच तो यह है कि श्रीमद् जितने उद्भट विद्वान थे, उतने ही महान तपस्वी, पूर्ण आध्यात्मिक और ज्योतिष के ज्ञाता थे।

आपने २५-२६ छोटी बडी प्रतिष्ठाएँ करवायीं और २५०० जिनबिंबो की अंजनशलाकाएँ संपन्न की, पर आपका कोई मुहूर्त विफल नहीं हुआ और न ही किसी भी प्रकार की हानि ही हुई।

श्रीमद् अपने जीवन के हर क्षेत्र में सफल रहे।

वही जीवन-जीवन है,जिसका कुछ इतिहास है,
वही चिन्तन-चिन्तन है, जिसमें कुछ आभास है ।
यों सपनों को चाहे हीर कणी से सजालो,
वही सृजन-सृजन है, जिसमें स्व का अहसास है ।.

गुरू-जीवनी

जीवनदर्शक-**मुनिराज श्री सम्यग्रत्नविजयजी**

प्रातःस्मरणीय, सौ धर्म वृहत्तपागच्छाधीश

प्रभु श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.की जीवन झांकी

ढाल-१ (राग - वालामारा -)

वालामारा राजेन्द्र सूरीश्वर शोभता,
वालामारा जिन शासन के मॉय रे
वालामारा मारग शुध्द बतावता,
वालामारा मिथ्यामत दूर पलाय रे वाला ॥१॥
वालामारा जन्म पोषसुदि सप्तमी,
वालामारा अठारासो त्र्यासी साल रे,
वालामारा ऋषभदास ना लाडला,
वालामारा केसरबाई ना लाल रे,वाला॥२॥
वालामारा माणकचन्दजी भ्रात छे,
वालामारा भरतपुर विख्यात रे,
वालामारा रत्नराज नाम स्थापता,
वालामारा स्वजन कुटुम्बमली साथ रे,वाला॥३॥
वालामारा श्रावक धर्म दीपावता,
वालामारा वीश वरस रह्या घेर रे,
वालामारा एकुणीसे तीन नी साल मॉ,
वालामारा यति दीक्षा ली आप रे,वाला॥४॥
वालामारा हेमविजय उदयपुर मॉ,
वालामारा रत्नविजय दियो नाम रे,
वालामारा यतिपणे अभ्यास मॉ,
वालामारा एकवीश गया अब्द ताम रे,वाला॥५॥
वालामारा जैनागम ने जाणता,
वालामारा घाणेराव चातुर्मास रे,
वालामारा घरणेन्द्र सूरि सहवास में,
वालामारा पर्व पयुषण खास रे,वाला,॥६॥
वालामारा सूरि धरणेन्द्रजी साथ में,
वालामारा हुओ अत्तर विखवाद रे,
वालामारा निजगुण सुगन्ध ने फेलावता,
वालामारा आया आहोर नी मॉय रे,वाला॥७॥
वालामारा वृतान्त गुरूजी ने वदता,
वालामारा दिये गुरूजी शाबाशी रे,
वालामारा समकित दिल मां धारी ने,
वालामारा गुरूहृदय निवास रे,वाला॥८॥

ढाल-२ (राग-वालामारा)

वालामारा एकुणीशे चोवीस नी साल मॉ,
वालामारा प्रमोदसूरि के हाथ रे,
वालामारा श्री पूज्यपद दियो आपने,
वालामारा छडी चामर के साथ रे,वाला॥१॥
वालामारा राजेन्द्र सूरिनाम स्थापता,
वालामारा संघ में जय जयकार रे,
वालामारा यशवन्तसिंहजी ठाकुरे,
वालामारा मान बढ़ायो आप रे,वाला॥२॥
वालामारा जालोर- जोधपुर शहेर मां,
वालामारा मान-सन्मान के साथ रे,
वालामारा विंचरंता गुरूवर चालीया,
वालामारा मालवदेश कियो हाथ रे,वाला ॥३
वालामारा धरणेन्द्र सूरि के पास में,
वालामारा नव कलम कराई मंजुर रे,
वालामारा यतिवर युगल साथ में,
वालामारा मुनिधन प्रमोदरूचि खास रे वाला ॥४
वालामारा नवदश पचविश साल मां,
वालामारा जावरा शहर के मॉय रे;
वालामारा क्रियोद्वार कियो आपने,
वालामारा छड़ी चामर सब त्याग रे;वाला. ॥५॥
वालामारा शुध्द चारित्र ने पालता,
वालामारा विचरन्ता गामोगाम रे,
वालामारा मेवाड़ मारवाड़ मालवा,
वालामारा गुर्जर नेमाड़ देश रे वाला॥६॥
वालामारा सत्यधर्म उपदेशता,
वालामारा सूरि राजेन्द्र महाराज रे,
वालामारा जयन्तसेन सूरि आपना,
वालामारा सम्यग रत्न गुणगाय रे वाला. ॥७॥

ढाल - ३ (राग-वाजे घड़ियालनी घंटडी.)

सूरि राजेन्द्र ने वन्दन हमारा, उठी रोज प्रभात रे, गुरुवर जयकारी...
सत्तर प्रकारे संयम पाल्युं, बावीश परिषह जित रे गु. १

गोचरी दोषबयालीश टाली, लेता शुद्ध आहार रे गु. २
छत्तीस गुणोथी शोभे गुरुजी, ज्ञानी गुण गम्भीर रे गु. ३
चालीश नी सालमां आगम पिस्तालीश, कुक्षि संघने सुणाय रे, गु. ४
विद्वतानी गुरु ख्याति फेली छे, गाम नगर पुर मांय रे, गु. ५
तीर्थोद्धार कराव्या गुरुजी, स्वर्णगिरि पर आप रे गु.६
राज्य ना शस्त्र हराव्या गुरुजी, प्रगट कराव्या जिन रोह रे गु. ७
कोरटाजी भाण्डवपुरनो आदि, तालनपुर विशेष रे गु ८
मोहनखेडा तीर्थनी स्थापना, थई छे जगत प्रसिद्ध रे गु. ९
संवत नवदश पंचावने, आहोर नगर मजार रे गु. १०
नवसो बिंबनी अंजनशलाका, करावी गुरुगुणवान रे गु. ११
कोरटाजी, सियाणा, मोहनखेडा, शिवगंज, तालनपुर रे, गु. १२
जालोर, थराद हरजी मां गुरुजी, अंजन प्रतिष्ठा कराय रे गु. १३
संघ प्रयाण उपधान आदि, कराव्या जग जयकार रे गु. १४
अग्नि ना कोप थी कुक्षि बचावी, भाविपण भुगताय रे गु.१५
साहित्य रचना आपनी शोभे, ग्रन्थ अट्ठावन जाण रे गु.१६
राजेन्द्र सूर्योदयनी रचना, कल्पसूत्र बालावबोध रे गु. १७
विशालकाय सात भाग बनाविया, अभिधान राजेन्द्र कोष रे गु. १८
बाणु सो पृष्ठवाले साठ हजार शब्द, संस्कृत प्राकृत भाषा रे गु. १९
चौद वरसलय लेखनी चलावी, पेंतीसकिलो वजन रे गु. २०
गच्छाचार पयन्ना वखाणो, आदि ग्रन्थ अनेक रे गु. २१
सूरि राजेन्द्र यतीन्द्र सूरिना, सम्यग्रत्न गुणगाय रे गु. २२

ढाल - ४ (राग-बाजे घड़ियाल नी घंटडी-)

सूरि राजेन्द्र ने वन्दन हमारा, उठी रोज प्रभात रे, गुरुवर जयकारी.
स्वर्णगिरि पर ध्यान लगाया, मांगीतुंगी पहाड़ रे गु. १
चामुंड वन में आत्म साधना, करता गुरुमहाराज रे गु. २
जंगली शेर एक आवीने चाल्यो, चरणे नमावी शिष रे गु. ३
बहोतेर दिन में आठ अट्ठाई, सवाक्रोड़ अरिहंत जाप रे गु. ४
पारणे एकासण करता गुरुवर, तपनी महिमा अपार रे गु. ५
साठनी साल मां चातुरमास, सुरत नगर मजार रे गु. ६
जैन धर्म नी जयपताका, फरकावी गुरुवर देव रे गु. ७
एम अनेकविध तपश्या करतां, संघनां कार्य अनेक रे. ८
केई भविकने दीक्षा दिलावी, केईक व्रत ने धार रे. ९
साठ चोमासा किया गुरुवर, आपी सद्धर्म उपदेश रे. १०
एशी वरस आयु पूरण करने, राजगढ़े स्वर्ग सिधाय रे. ११
जन्म-स्वर्गदिन एकज जाणो, पोषसुदि सातम खास रे गु. १२
मोहनखेड़ा में समाधिमंदिर, बनाव्युं श्री संघ साथ रे. १३
सूरि राजेन्द धनचन्द्र भूपेन्द्र, यतीन्द्र विद्याचन्द्र रे. १४
जयन्तसेनसूरि षष्टमपाटे, राजेन्द्र ज्योत प्रकाश रे. १५
सम्यग्रत्न नी विनति स्वीकारो, आपो सुबुद्धि विवेक रे. १६

प. पू. आचार्य भगवन्त श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. की

जीवन गाथा

रचयिता - श्री जगदीप डांगी "हर्षदर्शी"

पिछले सौ सालों का जब इतिहास उठाते हैं।
गुरुओं में राजेन्द्र सूरि-सा गुरू न पाते हैं। पिछले सौ सालों....।
केसर की कुक्षी में आकर, भरतपुर में जन्म लिया।
रिषभदासजी ने गोदी में, लाड़-प्यार से बड़ा किया।
बालपने में मात पिता संग, यात्रा को प्रस्थान किया।
केसरियाजी के रस्ते में, बाला का उद्धार किया।
घिरे लुटेरों से रात्रि में, हाहाकार मचा भारी।
रत्नराज नवकार मंत्र से, सबकी विपदा को टारी।
ऐसे योगी गुरूवर की, हम कथा सुनाते हैं। गुरूओं में....॥१॥
बडे भाई माणिकचंद के संग, मात-पिता से यूँ बोले।
व्यापार विदेशों में करने को, लंगर जहाजों के खोले।
मात पिता से आज्ञा लेकर, कलकत्ता प्रस्थान किया।
हीरे मोती सोने का, सिलोन में था व्यापार किया।
रोग ग्रस्त हुए मात-पिता, जब दोनों भाई अकुलाये।
व्यापार समेटा सारा, और भरतपुर में दौड़ के आये।
मात पिता के सेवक वो, तो सबके मन भाते हैं। गुरूओं में....॥२॥
मात-पिता का कुछ अन्तर से, उठा था जब सर से साया।
रत्नराज के अन्तर में, वैराग्य भाव था भर आया।
प्रमोद सूरिजी आये भरतपुर, उनका जब व्याख्यान सुना।
प्रबल भावना हुई रत्न की, वैराग्य राह को तुरन्त चुना।
आज्ञा ले भाई भाभी से, उदयपुर में दीक्षा ली।
रत्नराज ने रत्नविजय बन, ज्ञान-ध्यान की भिक्षा ली।
ऐसे ज्ञानी-ध्यानी गुरु की, सच्ची बात बताते हैं। गुरूओं में....॥३॥
सागरचंद्र यति ने इनको, शास्त्रों का ज्ञान कराया था।
भेद आगम का देवेन्द्रसूरि ने खुलकर के समझाया था।
ध्यान किया और ज्ञान लिया, जप-तप में भी वे आगे थे।
यतिगण के जब बने दफ्तरी, यतियों के भाग जागे थे।
गुरुवर धर्म का मर्म सभी को प्यार से सच्चा समझाते।
यतियों की कमजोरी को भी सदा सामने बतलाते।
शास्त्रों में पारंगत है, जो उनकी बात बताते हैं। गुरुओं में....॥४॥
शिथिलाचार बढ़ा यतियों में, यति मति को खो बैठे।
हुआ विवाद इत्तर के खातिर, झूँठे उल्टे मुँह लेटे।
जीत हुई राजेन्द्र गुरु की, यति पंथ को ठुकराया।
क्रियोद्धार कर नगर जावरा, तीन थुई को अपनाया।

लुप्त हुई थी कई सालों से, उसे प्रमाणित कर डाला।
शास्त्रों के ज्ञाता गुरुवर ने सच्चा ज्ञान बता डाला।
ऐसे ज्ञानी गुरुवर का हम ध्यान लगाते हैं। गुरुओं में.....॥५॥
आचार्य बने आहोर नगर में राजेन्द्रसूरीश्वर नाम हुआ।
गोड़ीजी के मन्दिर का यूँ, गुरु के हाथों काम हुआ।
अंजनशलाका और प्रतिष्ठा नूतन मंदिर बनवाये।
कष्ट चिरोला वासी के गुरुवर ने पल में मिटवाये।
मांगी तुंगी और मोदरा पर्वत पर तप आप किया।
आठ-आठ महिनों तप कर तन कुन्दन-सा चमकाय लिया।
शेर शिकारी तीरन्दाज भी जिनको शीश झुकाते हैं। गुरुओं में .....॥६॥
जालोर तीर्थ के मंदिर से गुरु, शस्त्रों को फिकवाया था।
निर्माण तीर्थ कर मोहनखेड़ा, जग में नाम कमाया था।
राजा महाराजाओं ने भी, जिनको शीष झुकाया था।
जैन धर्म का डंका जग में, गुरु ने यूँ बजवाया था।
लिखे अनेकों ग्रन्थ गुरु ने, जिनशासन दीपाया था।
भूले भटके मानव को, गुरु सच्चा पंथ बताया था।
ऐसे तीर्थोद्धारक गुरु के चरनन शीष झुकाते है। गुरुओं में.....॥७॥
यात्रा की कई तीर्थों की, और संघ कई थे निकलाये।
चातुर्मास साठ गुरूवर के, श्री संघ ने थे करवाये।
अनपढ़ और अज्ञानी को गुरु, ज्ञान का दान दिलाया था।
दीक्षा दे कई शिष्यों को यूँ गुरु ने ज्ञान बताया था।
भविष्य वक्ता पूरे गुरूवर, जलती कुक्षी बचाई थी।
अहमदाबाद में आग लगेगी, पहले बात बताई थी।
श्रावक के घर होती चोरी, चोर से माल दिलाते है। गुरुओं में....॥८॥
तेरा साल छः माह तीन दिन में, लिखा ग्रंथ राजेन्द्र कोष।
साहित्य की दे अमूल्य निधि, यूँ दिया विश्व को नव उद्घोष।
राजेन्द्र कोष विश्व की, देखो एक आलैकिक रचना है।
हस्तलिखित जो पड़े हुए उन ग्रन्थों का कुछ करना है।
धन भपेन्द्रसूरीश्वर ज्ञानी, गुरुवर यतीन्द्रसूरीश्वरजी।
विद्याचंद्र के पाट बिराजे जयन्तसेन सूरीश्वर जी।
कुन्दनमल डाँगी लिखी, गुरु आरती हम सब गाते है। गुरुओं.....॥९॥
श्री संघ पर उपकार किये, और चमत्कार भी बतलाये।
जाति धर्म विद्वेष जहाँ थे, गुरु ने पल में मिटवाये।
जालोर, राजगढ़, खाचरोद, आहोर में संप थे करवाये।
धर्म के नाम पे लड़ते श्रावक, उनको पल में समझाये।
जागती ज्योत जले गुरुवर की, जो कोई ध्यान लगाता है।
'हर्षदर्शी' हो भटका मानव, सही राह चल जाता है।
हाजिर नाजिर हैं जो गुरुवर, उनका ध्यान लगाते हैं। गुरुओं में.....॥१०॥

सजकर समकित का श्रृंगार
भारत भूमि में विचरे राजेन्द्रसूरीश्वर

(– शा. इन्द्रमल भगवानजी बागरा)

करने जैनों का उद्धार, धर्म–क्रान्ति के अवतार।
भारतभूमि में आए राजेन्द्र गुरुवर।। भारत – – –

अज्ञान अँधियारी, चिहुँ ओर छाई थी।
ज्ञान की ज्योति गुरुवर ने जगाई थी।।
सजकर समकित का श्रृंगार, बनकर शांति के अवतार।
मरुधर भूमि में आए राजेन्द्र गुरुवर।। मरुधर – – –

श्री पूज्य यति सु, साधना को भूले थे।
शिथिलाचारी शासक बन फूले थे।
करने यति क्रान्ति आह्वान, सम्यग् चारित्र शील विकास।
मालव भूमि में आए राजेन्द्र गुरूवर।। मालव – – –

जिन प्रतिमा, जिन भवन को भूले थे।
स्वेच्छाचारी हम, मौज में झूले थे।
करने तीर्थों के उद्धार, मूर्ति पूजा का प्रचार।
जालोर प्रान्त में आए राजेन्द्र गुरुवर।। जालोर – – –

मंत्र शिरोमणि नवकार खोए हम।
कामण–टूमण–टोटको से मोहे हम।
बताने आत्म शक्ति अहसास, अतुल परमेष्ठी के उपकार।
भिनमाल भूमि पधारे राजेन्द्र गुरुवर।। भिनमाल – – –

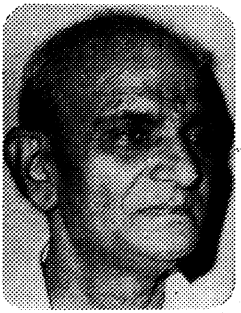

सद्गुरु–देव–धर्म, भक्ति भुलाई थी।
असंयति देव सेवा दिल में समाई थी।
करने सम्यग्ज्ञान प्रचार, उत्तम मनुष्य जन्म है सार।
मेवाड़ भूमि में आए राजेन्द्र गुरुवर।। मेवाड़ – – –

अक्रिया वादी कई वित्तंडावादी बन।
स्व–पर का किया, करते थे वंचन।
कराने सन्मति का संधान, षड आवश्यक शुचिता ध्यान।
गुर्जर प्रान्त पधारे राजेन्द्र गुरुवर।। गुर्जर – – –

आत्मा साधक शुभ भावना न भाई थी।
कुगुरु कुदेव की दासता ही पाई थी।
करने नव जागृति अभियान, हरने दाम्भिकी व्यवधान।
थराद्रि भूमि में आए राजेन्द्र गुरुवर।। थराद्रि---

सामाजिक कुरीतियाँ, सर्वत्र छाई थीं।
परस्पर कटुता की बाढ मानो आई थी।
करने जनगण का कल्याण, बरसा क्षमा–सुधा–रसधार
नेमाड़ प्रान्त पधारे, राजेन्द्र गुरुवर।। नेमाड़---

गाँव–गाँव में मायूसी छाई थी।
तड़ें–टूटन और अनबन ठाई थी।
करने संगठन संचार, लुटाए समता के उपहार।
चिरोला क्षेत्र पधारे, राजेन्द्र गुरुवर।। चिरोला---

कृत्याकृत्य से, जन अनजाने थे।
रीत आचरणा सभी मनमाने थे।
वर ली पंचांगी प्रमाण, पूजा–देववन्दन निर्माण।
साधन–साध्य सुझाए राजेन्द्र गुरूवर।। साधन---

शास्त्र आगम में ऋजुता समाई थी।
अर्थ घटाते अनभिज्ञता गहराई थी।
करके शब्दांबुहिसंधान, कोश अभिधान राजेन्द्र निर्माण
विद्वद व्योम में व्यापे, राजेन्द्र सूरीश्वर।। विद्वद व्योम---

सूरिराजेन्द्र वाणी भवि जन भजते।
'इन्द्र' नर–नारी मिल मंगल सजते।
बीता भस्मक, ग्रह अवसान, वर्धित जिनशासन विज्ञान
मोहन खेड़ा नवजो राजेन्द्र गुरुवर।। मोहन खेड़ा---

विवेक सहित क्रिया करें।

कोई भी क्रिया या आराधना करते समय यदि विवेक नहीं रखा जाये तो वह क्रिया दूषित बनती है व आराधना विराधना का रुप ले लेती है। नैवेद्य पूजा का विधान है किन्तु बरसात के दिनों में नवात (शक्कर) या पिपरमेन्ट खुली रखने से नमी पकडती है। चिंटी–मकोड़े आदि जीव–जंतु भी आने से जीवों की हानि के निमित्त बनते हैं। नमी पकड़ने के कारण भंडार में नोट–चावल आदि चिपककर जीव हिंसा का कारण बनती है, अतः नैवेद्य पूजा में शक्कर (नवात) का प्लास्टीक में पैक कर रखें ताकि आशातना/विराधना से बचा जा सके।

पिपरमैन्ट तो अभक्ष्य होने से रखनी ही नहीं चाहिये।

– सम्पादक

श्री शीतलनाथजी जिन स्तवन (१०)

विवेचन - मुनिराज श्री जयानंदविजयजी

(शीतल जिन नी सप्त सुभंगी रे.... ए टेर)

शीतल जिन नी सप्त सुरंगी, भेद भंगी भ्रमी भूलारे।
नय गर्भित नव तत्त्व निक्षेपा, पामे नहीं पीडे फूलारे। शीतल. ।। १ ।।

हे भगवंत! आप श्री के द्वारा प्ररूपित सप्त भंगी जो सात प्रकार से पदार्थ के स्वरूप को समझाने रूप रंग से रंगीन है। उस सप्त भंगी का स्वरूप जब तक समझ में नहीं आता, उस पर श्रद्धा नहीं होती, उसका ज्ञान प्राप्त नहीं किया जाता तब तक आत्मा अन्य दर्शनावलंबियों के द्वारा एक एक भंग, एक एक नय से दर्शित सत्य के अंश को संपूर्ण परिपूर्ण सत्य मान कर उन दर्शनों में कथित कथनों पर विश्वास के कारण भ्रमित होकर पथ से भटक गये पथिक सम भवरूप वन में भटक जाती है।

सर्वांग में आँखे महत्व का अंग है उन आँखों में फूले का हो जाना अत्यन्त पीड़ाकारक है वैसे आत्मा जब तक सप्तभंगी नवतत्त्व चार निक्षेपा सप्त नय आदि का ज्ञान प्राप्त न करें, तब तक मिथ्यात्व रूप फूला आत्मा के लिए अत्यन्त दुःखदायक है।

प्रथम भंग छे संग्रह पक्षे, द्वितीय व्यवहार ने दाखे रे।
अवक्तव्य छे उभय उजासी, भंग चौथे दोय भाषे रे। शीतल. ।। २ ।।

स्यात् अस्ति नामक प्रथम भंग जगत में कथंचित पदार्थों को स्वीकार करता है। यह भंग नयवाद के अन्तर्गत संग्रह नय के सामान्य से सभी पदार्थों के होने का स्वीकार करने रूप मंतव्य से सादृश्यता धारक है। स्यादअस्ति में पदार्थ के एकत्वपने रूप सामान्य रूप को स्वीकार किया है। वैसे संग्रह नय भी अनेकत्वपने को स्वीकार न कर सामान्य से एकत्व पने को स्वीकार करता है। अतः गुरुदेव श्री ने स्याद्अस्ति नामक भंग को संग्रह नय के पक्ष में दर्शाया है।

स्याद्नास्ति नामक द्वितीय भंग जो कथंचित पदार्थों का निषेध करने वाला है। स्व स्वरूप में पदार्थ के अस्तित्व के समय पर रूप में पदार्थका असत्पना द्वितीय भंग में दर्शाया है पदार्थ के विशेष स्वरूप की, अनेकत्वपने की व्याख्या करते समय सामान्य एकत्व का निषेध ही रहता है। यह भंग व्यवहार नय से साम्यता धारक है। व्यवहार नय प्रत्येक पदार्थ में विशेषपना अनेकत्वपना स्वीकार कर सामान्यत्व एकत्व का निषेध करता है अतः स्यादनास्ति रूप द्वितीय भंग व्यवहार नय के पक्ष में दर्शाया है।

स्यात् अवक्तव्य नामक चतुर्थभंग कथंचित पदार्थ के सामान्य एवं विशेष स्वरूप को स्वीकार करते हुए भी सत् असत् का वर्णन एक साथ अवाच्य मानता है। संग्रहनय के माने हुए सामान्य स्वरूप का एकत्वता का एवं व्यवहार नय के माने हुए विशेष स्वरूप का एक

साथ वर्णन करना अवाच्य होने से गुरुदेव श्री ने कहा कि "उभय उजासी" यह चतुर्थभंग दोनों नयों को प्रकाशित करता है अत: चतुर्थभंग में संग्रह एवं व्यवहार दोनों नयों का समावतार होता है।

व्यवहार संग्रह चावीभक्ति, पंचम भंग प्रमाणो रे।
संग्रह व्यवहार विशेष विलासे, भंग छट्टे जिमभाणो रे। शीतल. ।। ३ ।।

स्यात्अस्ति अवक्तव्य नामक पंचम भंग कथंचित पदार्थ के अस्तित्व को मानते हुए उसका पूर्ण कथन अवाच्य मानता है क्योंकि सामान्य को स्वीकार करने पर विशेष का कथन नहीं हो सकता।

व्यवहार नय पदार्थ के विशेष स्वरूप को स्वीकार करता हैं, संग्रह नय पदार्थ के सामान्य स्वरूप को स्वीकार करता है। पदार्थ के एक स्वरूप के स्वीकार में दूसरे स्वरूप का कथन अवाच्य होता है।

गुरुदेवश्री व्यवहार संग्रह चावीभक्ति कहकर केवलज्ञानी भगवंतो की महत्ता दर्शाते हुए कहते हैं कि केवलज्ञान की प्राप्ति से प्रथम समय में पदार्थ का विशेष स्वरूप जानने में आता है दूसरे समय में सामान्य स्वरूप जानने में आता है। आगमों में विशेष स्वरूप को ज्ञान एवं सामान्य स्वरूप को दर्शन कहा है। केवलज्ञानी भगवंतो को प्रथम समय में ज्ञानोपयोग होता है दूसरे समय में दर्शनोपयोग होता है, अत: विशेष ज्ञान के समय सामान्य से जानना यह अवक्तव्य है।

स्याद् नास्ति अवक्तव्य नामक छट्टे भंग में कथंचित पदार्थ नहीं है, असत् है, एवं पदार्थ नहीं है ऐसा कहना अवाच्य है।

गुरुदेव श्री छद्मस्थ आत्माओं की अवस्था को लक्ष्य में रखकर दर्शाते हैं कि छद्मस्थ आत्मा को प्रथम सामान्य स्वरूप का दर्शन होता है पश्चात् दूसरे समय में विशेष स्वरूप का ज्ञान होता है, जो क्रमश: संग्रह एवं व्यवहार नय से संबंधित है, छट्टे भंग में विशेष रूप पदार्थ नहीं है एवं ऐसा कथन अवाच्य है अत: यह भंग संग्रह एवं व्यवहार से संबंधित है।

सप्त संक्षिप्त छे, सप्तमभंगे, जाणे जे जगी जंगी रे।
उत्सर्ग ने अपवाद उमंगी, राखे पक्ष दुरंगीरे। शीतल. ।। ४ ।।

सातों नयों का संक्षेप में सप्तमभंग में समावेश होता है।

जिनशासन में किसी भी एक नय से पदार्थ की पूर्ण व्याख्या मानना मिथ्यात्व कहा है। सातों नयों की एक साथ मान्यता का स्वीकार ही सत्य दर्शन है। पदार्थ का पूर्ण दर्शन है एवं सप्तमभंग का भी यही कथन है कि स्व स्वरूप में जो पदार्थ है वही पदार्थ पर रूप में नहीं है। इन दोनों का वर्णन एक साथ करना अशक्य असंभव है यही पदार्थ का सत्य दर्शन है। यही स्याद्वाद है। इन दोनों की मान्यता एक समान होने से सातों नयों का समावेश सप्तम भंग में होता है। जो इस सिद्धान्त को स्वीकार करता है वह इस जग में उत्तम पुरुष है।

श्री शीतलनाथजी की स्तवना करते हुए गुरुदेव श्री ने कहा है कि उत्सर्ग आचरणा

के समय उत्सर्ग मार्ग का पालन एवं अपवादिक आचरणा के समय अपवादिक मार्ग का पालन एवं प्ररूपणा करने वाला दोनों पक्षों को अर्थात् स्याद्वाद को मानने वाला है और वही क्रिया करते समय उमंग युक्त उल्लास भावयुक्त होता है। आत्मोत्थान उसी का होता है। इसके विपरित वर्तन कारक उत्सर्ग के समय अपवाद, अपवाद के समय उत्सर्ग की प्ररूपणा एवं पालन करने वाला स्वयं का एवं अनेक आश्रितों का अहित करता है।

निश्चय व्यवहार ने वली निरखी सूरि राजेन्द्र सापेखी रे।
रीति एहजी जग में राजे, गाजे जग में गवेखी रे। शीतल. ।। ५ ।।

शुद्ध निश्चय शुद्ध व्यवहार, अशुद्ध निश्चय अशुद्ध व्यवहार के स्वरूप को आगमिक दृष्टि से देखकर शुद्ध निश्चय की प्राप्ति हेतु शुद्ध व्यवहार का पालन सापेक्ष व्यवहार का पालन करने का "सूरि = आचार्य, राजा = आचार्यों के राजा गणधर, इन्द्र = गणधरों के स्वामी तीर्थंकर" अर्थात् श्री शीतलनाथ भगवंत ने कहा है।

श्री शीतलनाथ भगवंत की यह रीति विश्व में प्रचलित है, जन जन में गुंज रही है, मुमुक्षु आराधकों ने पूर्व रूप से गवेषणा कर उस रीति को स्वीकार किया है।

गुरुदेवश्री ने श्रीशीतलनाथ भगवंत की स्तवना के माध्यम से सप्तभंगी, नवतत्त्व, चार निक्षेपा, उत्सर्ग अपवाद निश्चय व्यवहार के विषय का परिपूर्ण ज्ञान आगमज्ञाताओं से प्राप्त करने का दिव्य संदेश दिया है।

आराधकों की आराधना में ज्ञान एवं क्रिया का समन्वय अतीव आवश्यक है। ज्ञानार्जन में उपेक्षा कारक साधक की साधना एवं ज्ञानार्जन में निमग्नआत्मा क्रिया की उपेक्षा करता है तो उन दोनों का अंश मात्र हित न होकर अहित ही होता है।

प्रभु भक्ति के माध्यम से गुरुदेव श्री ने ज्ञानार्जन एवं क्रिया का आचरण इन दोनों को जीवन में अपनाने हेतु कहा है। हम हमारी शक्ति अनुसार ज्ञानार्जन करें एवं आचरणा शुद्ध विशुद्ध बनावें।

इस स्तवन का अर्थ मेरी अल्प बुद्धि से किया है ज्ञानी महात्मा मेरी त्रुटियों का मुझे दिग्दर्शन करावे।

(जिनाज्ञाविरूद्ध एवं गुरुदेव के आशय के विरूद्ध कुछ कहा गया हो तो मिच्छामि दुक्कडं।)

ज्ञान कसौटी १० के उत्तर

२२६) रिषभदेव २२७) राजेन्द्र सूरीश्वरजी २२८) राजूल २२९) राजूल एवं रहनेमि २३०) रेवती २३१) रत्नत्रयी २३२) राग २३३) राहु २३४) राणकपुरजी २३५) राजचन्द्र २३६) राता महावीरजी २३७) राग २३८) रत्नराज २३९) रसनेद्रिंय २४०) रैवतगिरी २४१) रजनी २४२) राईय २४३) राजगृही २४४) रौद्र २४५) रेणा २४६) रसत्याग २४७) रजोहरण २४८) रात्रिभोजन २४९) राजेश्वरी २५०) रक्षा

क्या आप जानते हैं कि

★ वडोदरा में स्थित तीन कारखानें - रासायनिक खाद का कारखाना, पेट्रोकेमीकल्स एवं रिफायनरी में प्रतिदिन ३६० लाख गेलन पानी का उपयोग हो रहा हैं अर्थात् १२० लाख घड़े पानी, जो १२ लाख ग्राम्य परिवारों (१ लाख शहरी कुटुम्बों) के लिये पूरा हो सकता हैं ।

★ देवनार कत्लखाने में प्रतिदिन ३५ लाख गेलन पानी का उपयोग किया जाता है ।

★ शरीर को आवश्यक ऊर्जा प्राप्त हो सके, इसके लिये जरुरत होती है कार्बोहाइड्रेट्स की । ये शाकाहारी भोजन में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं । मांसाहारी भोजन में कार्बोहाइड्रेट्स नहीं होते, इसलिये ऊर्जा प्राप्ति के लिये प्रोटीन, फैट या चिकनाई का प्रयोग करना पड़ता है, जो एक सामान्य समाधान नहीं है ।

★ शाकाहारी भोजन में विटामिनों का समावेश प्रचुर मात्रा में होता है । हरी पत्तियोंवाली सब्जियों में विटामिन 'ए'की अधिक मात्रा होती है । आंवला में विटामिन 'ए' 'सी' का भंडार होता है । आम,संतरा, अमरुद, नारंगी आदि में भी विटामिन 'ए', 'बी', 'सी' होते हैं, जो शरीर की धमनियों, दांतो और हड्डियों को मजबुत बनाने के लिये जरुरी है ।

★ पाचन क्रिया के सुचारुरुप से चलते रहने के लिये उसे रेशे वाले खाद्य पदार्थों की जरुरत होती हैं । ये वनस्पतियों से ही मिल सकते हैं । यह शाकाहारी भोजन का वह भाग है जिस पर पाचक अम्ल का कोई असर नहीं होता और वह मल के साथ शरीर से निकल जाता हैं ।

★ २० वर्षों तक अफ्रीका में प्राप्त अनुभव के बाद डॉ. डेनिस बर्किट ने बताया है कि उस क्षेत्र में दिल की बिमारियां, मधुमेह, बड़ी आंत का कैंसर, पित्त की तथा पाचन संबंधी बीमारियां इसलिये बहुत कम होती हैं क्योंकि वहां के लोग शाकाहारी हैं ।

★ आज भारत की भूमि उपयोगी खनिजों से वंचित होती जा रही है । जब हम अपनी आठवीं पंचवर्षीय योजना की समीक्षा करते हैं तब पाते हैं कि इस योजना के अंतर्गत मांस-निर्यात के लिए कई नये बूचड़खाने खोले जा रहे हैं ।यदि यही स्थिती रही तो वह दिन दूर नहीं जब भारत की धरती बंजड़ होगी और यहाँ के रहने वाले कई असाध्य रोगों से ग्रस्त होंगे।

★ एक ब्रिटिश ईस्ट-इंडीया कम्पनी ने भारत से व्यापार कर इस सुवर्णभूमि को दरिद्रभूमि बनाया और इस देश में पौने दो सौ साल तक राज्य किया, आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए देश के दरवाजे पूरे खोल दिये गये हैं । अब तो एक दो नहीं १७५० बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपना कारोबार इस देश में कर रही हैं और जमकर आर्थिक शोषण कर रही हैं ।

आओ! 'आम्रवृक्ष' से कुछ सीखें!

[मुनि श्री रत्नसेनविजयजी]

अहमदाबाद से पाटण की ओर हमारी विहार – यात्रा चल रही थी। गर्मी के दिन थे किंतु प्रातःकाल की मधुरवेला में प्रकृति का वातावरण अत्यंत ही सुहावना था। गांधीनगर के इलाके में सड़क के दोनों ओर बड़े – बड़े छायादार वृक्ष थे। अचानक मेरी नजर सड़क के एक ओर रहे 'आम्रवृक्ष' पर पड़ी। ग्रीष्म ऋतु होने के कारण वह अत्यंत ही हराभरा था। ऊपर सूर्य अपनी तीक्ष्ण किरणों से पृथ्वीतल को तपा रहा था – जहाँ दूसरी ओर यह आम्रवृक्ष अपने शरणागत पथिक को अत्यंत ही ठंडी छाया प्रदान कर रहा था। वह आम्रवृक्ष ऊपर ताप को सहन कर रहा था, जबकि नीचे बैठे पथिक के ताप संताप को दूर कर रहा था।

आम्रवृक्ष की इस परोपकार वृत्ति के दर्शन के साथ ही मुझे लगा – यह 'आम्रवृक्ष' मौन रहकर भी अपने पवित्र आचरण द्वारा हमें बहुत कुछ प्रेरणाएँ देता है।

आम्रवृक्ष की अपनी अनेकविध विशेषताएँ हैं, जो हमारे लिए अत्यंत ही प्रेरणास्पद है।

आम्रवृक्ष की प्रमुख विशेषता हैं – ताप सहन कर भी अपने अश्रित को ठंडक प्रदान करता है।

जीवन में थोड़ी–सी भी प्रतिकूलताएँ आनेपर हम हताश – निराश हो जाते है, आकुल – व्याकुल बन जाते है। जबकि यह आम्रवृक्ष सूर्य की तीक्ष्ण किरणों के बीच भी सदा हंसता रहता हैं, सदालहलहाता है। आकुलता – प्रतिकूलता की अभिव्यक्ति के लिए उसके पास एक शब्द नहीं है।

सचमुच यह आम्रवृक्ष सहनशीलता का अद्‌भुत आदर्श है। प्रतिकूलता को सहन करके भी परोपकार करना यह आम्रवृक्ष का आदर्श है।

सहनशीलता के इस आदर्श को यदि हम अपनें जीवन में अपना लें तो हमारा जीवन आम्रवृक्ष के आम्रफल की भांति अत्यंत ही मधुर बन सकता है।

आम्रवृक्ष का फल इतना मीठा क्यों? इसके पीछे एक ही कारण है। वह आम्रवृक्ष वैशाखी लू को सहन करता है।

सहनशील व्यक्ति ही दुनिया के सर्वोच्च पद पर आसीन हो सकता है।

जो व्यक्ति थोड़ी–सी प्रतिकूलता को पाकर भी आकुल – व्याकुल बन जाता है। थोड़ी–सी प्रतिकूलता को देख कोपातुर बन जाता है – ऐसा व्यक्ति जीवन में सफलता हासिल नहीं कर पाता।

सचमुच, आम्रवृक्ष को देखने के बाद उसके सहनशीलता के आदर्श को अपने जीवन में उतारने का हमे दृढ़ संकल्प करना चाहियें।

आम्रवृक्ष की अपनी दूसरी विशेषता हैं – फल आने पर वह अत्यंत ही विनम्र हो जाता है। वृक्ष पर आम्रफल लगने के साथ ही वृक्ष की सारी टहनियाँ नीचे झूक जाती है। जिससे कोई; भी व्यक्ति आसानी से उन फलों को प्राप्त कर सकता है।

आम्रवृक्ष का यह मौन संदेश है, जीवन में किसी भी प्रकार की सिद्धि प्राप्त होने पर अत्यंत ही विनम्र बनो।

पुरुषार्थ एवं भाग्य के बल से, जीवन में अनेक प्रकार की सिद्धियाँ हाँसिल होती हैं, परन्तु उन सिद्धियों का जीवन में गर्व नहीं होना चाहियें।

अभिमान पतन का मूल है। अभिमान के साथ ही जीवन में पतन का प्रारम्भ हो जाता है।

जीवन में प्राप्त हुई ज्ञान, तप, जप आदि की शक्ति का अभिमान न करें।

रावण ने अपनी शक्ति का अभिमान किया तो उसे युद्ध भूमि में बेमौत मरना पड़ा।

दुर्योधन ने सत्ता का अभिमान किया, उसके फलस्वरूप उसे करूण स्थिति में मौत का शिकार होना पड़ा। राजा श्रेणिक ने बल का गर्व किया तो उसे नरक में जाना पड़ा।

पूर्व भव में तप का अभिमान करनेवाले कुरगडु मुनि को तप में भयंकर अंतराय पैदा हुआ।

सचमुच विनय तो सर्वगुणों का मूल है। जो विनीत है – विनम्र है – वह अपने जीवन में सब कुछ प्राप्त कर लेता है।

जिस प्रकार चुंबक अपने नियत क्षेत्र में रहे लोह कण को अपनी ओर खींच लेता है, उसी प्रकार जिसके जीवन में विनय है, वह समस्त गुणों को अपनी ओर खींच लेता है।

भोजन यदि पचता हैं तो खून बनता है और पाचन न हो तो निरर्थक अजीर्ण द्वारा नए रोगों को ही जन्म देता है।

सत्ता, सम्पत्ति और शक्ति की प्राप्ति के बाद विनम्र व्यक्ति ही उस सत्ता आदि को पचा सकता है और सर्वत्र जनप्रिय बन सकता है। अभिमानी व्यक्ति को प्राप्त हुई सत्ता सम्पत्ति आदि तो स्व–पर उभय के लिए अनिष्टकारक ही सिद्ध होती है।

आम्रवृक्ष की अपनी तीसरी विशेषता है – पत्थर फेंकनेवाले को भी वह मीठे फल प्रदान करता है।

अपने उपकारी का भला चाहने व करनेवाले नर तो इस दुनिया में बहुत मिलेंगे – परंतु अपने अपकारी को भी मीठे फल देनेवाले नर तो विरले ही मिलेंगे। किसी ने अपनी प्रशंसा की है और हम भी उसकी प्रशंसा कर ले, इसमें कोई बड़ी बात नहीं

हैं, किन्तु कोई हमें गाली दे, कोई हमें कटु शब्द सुनाएँ और फिर भी हम उस व्यक्ति के जीवन में रही विशेषताओं की प्रसन्न मन से प्रशंसा करे – तो यह अपनी बहुत बड़ी विशेषता होगी।

किसी ने हमें आपत्ति में सहायता की हो–– ऐसे व्यक्ति को आपत्ति आने पर हम भी सहायता कर दे तो यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। उपकारी पर उपकार करना – यह तो सज्जनता का लक्षण है, परन्तु अपकारी पर भी उपकार करना यह तो महापुरुष का ही लक्षण है।

आम्रवृक्ष हमें महापुरुष बनने की मूक प्रेरणा देता है।

आम्रवृक्ष के दर्शन के बाद यदि हमारें जीवन में उपकारी के प्रति कृतज्ञता और अपकारी के प्रति उपकार की भावना हमारे जीवन में पैदा हो जाय तो हमारा जीवन सफल और सार्थक बन सकता है।

आम्रवृक्ष की चौथी विशेषता है कि उसका हर अंग दूसरों को सहायता देता है।

आम्रवृक्ष पर मंजरी का आगमन होता है, उस आम्र–मंजरी के भक्षण से ही कोयल का कंठ अत्यंत मधुर बनता है। आम्र–मंजरी को खाने के बाद कोयल अत्यंत ही मधुर कंठ से गाती है, उसके स्वर में अत्यंत ही मधुरता आ जाती है। उसकी क्रेंजन के श्रवण में भी अत्यंत आनंद की अनुभूति होती है।

आम्रवृक्ष की छाल का अनेकविध औषधियों में प्रयोग होता है।

आम्रवृक्ष के पत्ते भी मांगलिक प्रसंगों में तोरण के रूप में बांधे जाते हैं।

आम्रवृक्ष के फल की छाल व गुटली का भी सागसब्जी आदि के रूप में उपयोग होता है।

सचमुच यह आम्रवृक्ष अपने सर्वस्व समर्पण का प्रतीक है। परोपकार के लिए वह अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देता है।

आम्रवृक्ष की इस सर्वस्व समर्पण और परोपकार वृत्ति के आदर्श को नजर समक्ष रख हमारें जीवन में भी परोपकार की वृत्ति–प्रवृत्ति आ जाय तो हमारा जीवन सफल – सार्थक बन सकता है।

हमारे प्रतिनिधी

श्री उत्तमचंद जैन (दिल्ली) को शाश्वत धर्म का प्रतिनिधी नियुक्त किया गया है। कृपया ग्राहक बनाने विज्ञापन प्राप्त करने आदि में इन्हें सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें।

– सम्पादक

पशु और पर्यावरण

– श्री पन्नालाल मुन्धड़ा

भारतीय संस्कृति में पशुओं को न केवल मनुष्यों के समानान्तर जीवन जीने का अधिकार प्राप्त था बल्कि उनको देवताओं के वाहन के रुप में भी पूजा जाता था। गाय को तो साक्षात् देवताओं की जननी के रूप में आदर व सत्कार प्राप्त था। यदि सदियों पहले भारत एक सोने की चिड़िया कहलाता था तो उसका मुख्य कारण भारत का पशु–सम्पदा में धनी होना ही था। यही कारण था कि कृषि एवं व्यापार के क्षेत्र में भी भारत अग्रगणी था। बेकारी या बेरोजगारी जैसे शब्द भारतीय परम्परा के इतिहास में दुर्लभ थे।

अत्यंत दुर्भाग्य की बात है कि पश्चिमी मृग मरीचिका से भ्रमित होकर अंधाधुंध पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण किया जाने लगा, एवं पशुओं को भ्रातृवत व्यवहार के स्थान पर उन्हें समाज पर बोझ माना जाने लगा। इसी का फल है कि आज भारत पर्यावरण की दृष्टि से प्रदुषित देशों की श्रेणी में अग्रगण्य है। हमारे पर्यावरण की दुर्दशा अफ्रीका तथा लेटिन अमेरिका इत्यादि प्रदुषित देशों से भी बढ़कर है। १९८७ के वन सर्वेक्षण से पता लगता है कि जहां स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय भारतीय भूभाग का १९.५२ प्रतिशत वन प्रदेश था वहां आज यह क्षेत्र घटकर १०.८८ प्रतिशत ही रह गया है, अर्थात ३५–४० प्रतिशत वन प्रदेशों में कमी आयी है एवं यह कमी निरन्तर बढ़ती ही जा रही है।

नियोजित विकास के क्षेत्र में वनों की महत्वपूर्ण भूमिका को योजना निर्धारकों ने सही–सही नहीं आंका, यही कारण है कि योजना व्यय का महज ०.५ प्रतिशत से १ प्रतिशत ही वनों पर खर्च किया गया। परिणाम यह है कि प्रति व्यक्ति वन्य क्षेत्रफल जो कि १६०५ वर्ग मी. होना चाहिये आज केवल ६७१ वर्ग मी. ही रह गया है।

दुर्भाग्यवश भूमिरक्षण की प्रक्रिया से हो रही अधिक हानि को गम्भीरता से नहीं लिया जा रहा यद्यपि यह एक महाविपदा का रूप धारण कर चूकी है। भूमिरक्षण का एक और महत्वपूर्ण कारण है : रासायनिक उर्वरकों तथा कीटकनाशक दवाओं का बेराकटोक प्रयोग जो हमारे पर्यावरण तथा उपजाऊ भूमि पर कहर ढा रहा है। जबकि उपलब्ध आंकड़ों से यह निर्विवाद सत्य सिद्ध हो चुका है कि इनके प्रयोग से उत्पादन में कमी हुई है।

अधिक उत्पादन के नाम पर रासायनिक उर्वरकों तथा फसलों की सुरक्षा के लिए आजकल कई प्रकार की कीटकनाशक दवाओं का प्रयोग धड़ल्ले से हो रहा है। कृषि के क्षेत्र में रासायनिक उर्वरकों तथा कीटकनाशक दवाओं के बहुल प्रयोग से ये रसायन

वायुमण्डल को भी दूषित करते हैं और कृषि उत्पादन में इनके जहरीले अवशेष प्रविष्ट कर जाते हैं जो अंततः मनुष्य के शरीर में नाना प्रकार के रोगों को जन्म देते हैं। निस्संदेह मनुष्य पर्यावरण का प्रमुख घटक है। यदि मनुष्य के शरीर में विकार उत्पन्न होते हैं तो सम्पूर्ण पर्यावरण कलुषित हो जाता है। अतः स्वच्छ पर्यावरण के लिये मनुष्य का स्वस्थ होना अभिष्ट है।

इसके विपरीत यदि पशुओं के मलमूत्र को सेन्द्रीय खाद व सेन्द्रीय कीटकनाशक के रूप में खेतों में प्रयोग किया जाये तों खाद्य उत्पादन में वृद्धि ही नहीं होगी बल्कि पर्यावरण स्वच्छ रहेगा क्योंकि उस अवस्था में रासायनिक उर्वरक तथा कीटकनाशक दवाओं की आवश्यकता नहीं रहेगी।

विभिन्न पशु–पक्षी अनूठे ढंग से पर्यावरण को स्वच्छ रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है उदाहरणार्थ – मछलियाँ जल को स्वच्छ रखने में बहुत सहायक सिद्ध हुई हैं। उन्हीं के कारण नदी, नाले, तालाब – यहां तक कि समुद्र का जल भी स्वच्छ रहता है। गन्दे पानी में मच्छरों के प्रजनन से मलेरिया का रोग फैलने लगता है। प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका है कि यदि गन्दे पानी में मछलियां छोड़ दी जायें तो वे मलेरियां के कीड़ों को खाकर मलेरिया की रोक थाम में मदद करती हैं। सच तो यह है कि मछलियां पानी में व्याप्त विषैले रासायनिकों को भी उदरस्त कर पानी को स्वच्छ रखने में मदद करती है।

मेंढक नदी, नालों तथा तालाबों आदि के आसपास के भूभाग पर उत्पन्न हुए हानिकारक कीड़ों को अपना भोजन बनाकर न केवल कृषि उत्पादन में मदद करते हैं बल्कि पर्यावरण को भी स्वच्छ रखते हैं क्योंकि उस दशा में इन कीड़ों को मारने के लिये कीटकनाशक दवाइयां छिड़कने की आवश्यकता नहीं रह जाती।

सुअर शहरों एवं गांवो की गन्दगी, यहाँ तक कि व्यर्थ पालीथीन जैसे पदार्थों को भी खाकर हजम कर सकता है। एवं अपने मल के रूप में कृषि उत्पादन में सहायक सेन्द्रीय खाद उपलब्ध करता है। इस प्रकार मनुष्य को न केवल स्वच्छ पर्यावरण ही प्रदान करने में सहायता करता है वरन् उसके भोजन के लिये अन्न उत्पादन की वृद्धि में भी सहायक सिद्ध होता है।

भेड़–बकरियां जंगलों में चारा तो अवश्य खाती हैं किन्तु साथ ही जंगल को नुकसान पहुंचानेवाले कीड़े–मकोड़ों को भी ग्रसित कर जाती हैं। पौधों के बीज वे अपने मल के माध्यम से इस प्रकार भूमि में वापिस पहुंचा देती हैं कि वे जल्द ही उग कर बड़े–बड़े वृक्षों का रूप धारण कर लेते हैं।

गाय भैंस एवं अन्य मवेशी–घाँस फूस एवं पौधों को खाकर हमें दूध जैसा पौष्टिक आहार तो उपलब्ध कराते ही हैं, साथ ही हल जोतने और माल ढोने का भी कार्य बखूबी पूरा करते हैं। इसके अतिरिक्त गोबर गैस के रूप में खाना पकाने जैसी आवश्यकताओं के लिये इंधन भी मुहय्या करती हैं जिससे पर्यावरण भी स्वच्छ बना रहता है।

कई अन्य पशु जैसे कि ऊंट, गधा, घोड़ा इत्यादि भी माल ढोने तथा वाहन खींचने के लिए लाभकारी ढंग से प्रयोग में लाए जा सकते हैं। यातायात के लिए इन पशुओं का प्रयोग करने से हमें पेट्रोल व डीजल पर निर्भर नहीं होना पड़ेगा। और न ही बहुमूल्य विदेशी मुद्रा खर्च करनी पड़ेगी बल्कि पर्यावरण भी शुद्ध बना रहेगा क्योंकि यह तो सर्वविदित ही है कि डीजल और पेट्रोल वाहनों से निकलनेवाला धुआं बुरी तरह से पर्यावरण को दूषित करता है।

इसी प्रकार वनों में रहनेवाले सैकडों अन्य पशुपक्षी जंगल में फल, फूल और पत्ते खाकर अपने मल के द्वारा बनों की बढ़ोत्तरी में सहायता करते हैं।

किन्तु दुर्भाग्यवश पशु एवं पक्षियों को सिर्फ जीभ के स्वाद के लिये लाखों की तादाद में कसाईखानों में काटा जाने लगा, त्योहारों पर उनकी बलियां चढ़ाई जाने लगी, और वे शिकार के मुख्य निशाने बन गये। परिणाम यह हुआ कि न सिर्फ हमारा देश बल्कि सम्पूर्ण विश्व आज प्रदूषण की भयावह स्थिति में पहुंच गया है।

यदि हम प्रदुषण की रोक थाम कर मानव जाति के लिये एक स्वच्छ वातावरण उपलब्ध करना चाहते हैं तो हमें प्रकृति के सभी जीवों को भ्रातृवत प्रेम कर अपने साथ जीने का अवसर प्रदान करना होगा। पशु एवं पक्षियों के बिना अच्छे पर्यावरण की कल्पना मात्र स्वप्न हो सकती है, यथार्थ नहीं।

शाश्वत धर्म को भेंट

२०१/– श्री. जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ खाचरोद की ओर से, आचार्य श्री. जयंतसेनसूरिजी की आज्ञानुपर्ती साध्वीजी श्री. कल्पकताश्रीजी आदि ठाणा ५ के खाचरोद (म. प्र.) में चातुर्मास सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष में सप्रेम भेट।

२०१/– पू. साध्वी श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी की सुशिष्या साध्वी श्री कनकप्रभा श्रीजी आदि ठाणा ६ के बड़नगर (म. प्र.) में चातुर्मास सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष में श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ बड़नगर की ओर से सप्रेम भेंट।

१५१/– खाचरोद निवासी श्री बाबुलालजी भारतीय एवं श्री मति कोकिला भारतीय की ओर से सुपुत्र दिनेशकुमार का शुभ विवाह चि. बबीता के साथ सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष में सप्रेम भेंट।

७५/– स्व. पू. साध्वी श्री हेमरत्ना श्रीजी म.सा. की पावन स्मृती में श्री. चन्द्रप्रभु जैन नया मन्दिर ट्रस्ट मद्रास की ओर से सप्रेम भेंट।

ज्ञान कसौटी - (१०)

संकलन : महेन्द्र जे. संघवी

(स्वाध्यायी पाठक निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पहले कमशः कागज पर लिखें, फिर इस अंक में पृष्ठ 23 पर दिये गये उत्तरों से मिलान करें।(संपादक)

[नोट- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'र' से शुरू होते हैं।]

(२२६) चौबीस तीर्थंकर में से एक ?

(२२७) जावरा में क्रियोद्धार करने वाले महान् आचार्य ?

(२२८) नेमिनाथ किसके तोरण से वापस लौटे ?

(२२९) एक साध्वी ने एक पथ भ्रष्ट साधु को संयम में स्थिर किया उन दोनों के नाम ?

(२३०) भगवान महावीर की प्रसिध्द श्राविका ?

(२३१) सम्यक् ज्ञान दर्शन और चारित्र की त्रिवेणी ?

(२३२) अठारह पापस्थानकों में से एक

(२३३) नौ ग्रहों में से एक

(२३४) १४४४ खंभों वाला प्रसिध्द तीर्थ

(२३५) आत्म सिध्दि शास्त्र के रचयिता

(२३६) राजस्थान के हत्थुड़ी तीर्थ का अन्य नाम

(२३७) गौतम स्वामी को केवलज्ञान होने में रूकावट का कारण ?

(२३८) आचार्य श्रीमद्विजय राजेंद्रसूरीश्वरजी का सांसारिक नाम ?

(२३९) पंचेंद्रिय में से एक ?

(२४०) गिरनार तीर्थ का अन्य नाम ?

(२४१) रात (रात्रि) का पर्यायवाची शब्द ?

(२४२) सुबह किये जाने वाले प्रतिक्रमण का नाम ?

(२४३) जिस नगरी में मुनिसुव्रत स्वामी के चार कल्याणक हुए ?

(२४४) चार ध्यान में से एक ?

(२४५) स्थूलिभद्रजी की एक बहन का नाम ?

(२४६) एक बाह्य तप का नाम ?

(२४७) संयम का एक उपकरण ?

(२४८) .....नरक का द्वार है ?

(२४९) एक कहावत....सो नरकेश्वरी ?

(२५०) जो धर्म की.....करता है धर्म उसकी.....करता है ?

शब्दसागर इनामी स्पर्धा (६)

संकलन – साध्वीजी डॉ. प्रियदर्शनाश्रीजी, डॉ. सुदर्शनाश्रीजी

प्रेषक – श्री प्रदीप एम. जैन

प्रस्तुत पहेलियों के उत्तर एक पोस्ट कार्ड पर सुन्दर–स्वच्छ अक्षरों में लिखकर अपने पूर्ण नाम, पते एवं सदस्य संख्या (शाश्वत धर्म) के साथ कार्यालय के पते पर भिजवाएँ। स्पर्धा के उत्तर १० फरवरी तक पहुँच जाना चाहिये।

प्रथम विजेता को एक सौ रूपये, द्वितीय को साठ रूपये एवं तृतीय को चालीस रूपये का साहित्य भेजा जाएगा। प्रतियोगिता में उत्तीर्ण प्रतियोगियों का चयन लकी ड्रा द्वारा किया जावेगा।

सभी उतीर्ण प्रतियोगियों के नाम इनामी स्पर्धा ६ के उत्तर के साथ मार्च अंक में प्रकाशित किए जाएंगें।

पुरस्कार सौजन्य – अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, शाखा जोगेश्वरी (बम्बई)

पहेली नं. १ – सात अक्षर का एक नाम :– –––––––

१) जिसका चौथा और सातवाँ अक्षर मिलकर वस्त्र वाचक नाम बनता है।
२) जिसका प्रथम तृतीय और सप्तम अक्षर मिलकर वर्ष वाचक शब्द बनता है।
३) जिसका चतुर्थ और पञ्चम अक्षर मिलकर एक फल का नाम बनता है।
४) जिसका प्रथम, तृतीय और सप्तम अक्षर मिलकर कर्ण वाचक शब्द बनता है।
५) जिसका प्रथम और द्वितीय अक्षर मिलकर एक गाथापति की पुत्री का नाम बनता है।
६) जिसका प्रथम और द्वितीय अक्षर मिलकर एक आर्या का नाम बनता है।
७) जिसका प्रथम और द्वितीय अक्षर मिलकर एक सिंहासन का नाम बनता है।
८) जिसका छठवाँ और द्वितीय अक्षर मिलकर हारवाचक शब्द बनता है।
९) जिसके सर्वाक्षर मिलकर किसी एक श्रेष्ठी पुत्र का नाम बनता है।

पहेली नं. २ – सात अक्षर का एक नाम :– –––––––

१) जिसका चतुर्थ और पञ्चम अक्षर मिलकर सूर्य का नाम बनता है।
२) जिसका षष्ठम और सप्तम अक्षर मिलकर अहं वाचक शब्द बनता है।
३) जिसका चतुर्थ और सप्तम अक्षर मिलकर वनवाचक शब्द बनता है।
४) जिसका प्रथम, द्वितीय, षष्ठम और सप्तम अक्षर मिलकर एक प्रमाण बनता है।
५) जिसका तृतीय और सप्तम अक्षर मिलकर शरीर का नाम बनता है।
६) जिसका प्रथम, चतुर्थ, षष्ठम और सप्तम अक्षर मिलकर ख्वाइश वाचक शब्द बनता है।

७) जिसका सप्तम और चतुर्थ अक्षर मिलकर मनुष्य वाचक शब्द बनता है।
८) जिसके प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ अक्षर मिलकर श्रेष्ठता वाचक शब्द बनता है।

पहेली नं. ३ – सात अक्षर का एक नाम :– –––––––

१) जिसका चतुर्थ और सप्तम अक्षर मिलकर हाथ बनता है।
२) जिसका चतुर्थ, षष्ठम और सप्तम अक्षर मिलकर एक वृक्ष का नाम बनता है।
३) जिसका पञ्चम और सप्तम अक्षर मिलकर बाण का नाम बनता है।
४) जिसका प्रथम और चतुर्थ अक्षर मिलकर एक वृक्ष का नाम बनता है।
५) जिसका द्वितीय और तृतीय अक्षर मिलकर पराजय का द्योतक बनता है।
६) जिसका द्वितीय और सप्तम अक्षर मिलकर माला वाचक शब्द बनता है।
७) जिसके प्रथम और पञ्चम अक्षर मिलने से एक चैत्यवन्दन की शुरुआत होती है।
८) जिसका तृतीय और पञ्चम अक्षर मिलकर भीड़ वाचक शब्द बनता है।
९) जिसका प्रथम और षष्ठम अक्षर मिलकर एक औज़ार का नाम बनता है।

पहेली नं. ४ – पाँच अक्षर का एक नाम :– –––––

१) जिसका प्रथम और अन्तिम अक्षर मिलकर गणधरों में से एक गणधर के पैर का चिह्न बनता है।
२) जिसका द्वितीय और तृतीय अक्षर मिलकर मोहनीय कर्म के भेदों में से एक भेद का नाम होता है।
३) जिसका प्रथम और अन्तिम अक्षर मिलकर नेत्रवाचक शब्द बनता है।
४) जिसका तृतीय और पञ्चम अक्षर मिलकर एक रुम वाचक शब्द बनता है।
५) जिसका चतुर्थ और पञ्चम अक्षर मिलकर पेड़ वाचक शब्द बनता है।
६) जिसका प्रथम, द्वितीय और तृतीय अक्षर मिलकर एक सम्राट का नाम बनता है।
७) जिसके पाँचों अक्षर मिलकर त्रेसठशलाका पुरुषों में से एक महापुरुष को वृक्ष के नीचे केवलज्ञान होनेवाले एक पेड़ का नाम बनता है।

पहेली नं. ५ – पाँच अक्षर का एक नाम :– –––––

१) जिसका द्वितीय और पञ्चम अक्षर मिलकर त्रिदोष में एक दोष का नाम बनता है।
२) जिसका प्रथम और चतुर्थ अक्षर मिलने से वृद्धावस्था की निशानी बनती है।
३) जिसका प्रथम और चतुर्थ अक्षर मिलकर यदुवंशी एक राजकुमार का नाम बनता है।
४) जिसका प्रथम और चतुर्थ अक्षर मिलकर एक सैन्य सूचक नाम बनता है।
५) जिसका प्रथम और चतुर्थ अक्षर मिलकर गौतम बुद्ध के वैराग्य का एक कारण बनता है।
६) जिसका तृतीय और चतुर्थ अक्षर मिलकर एक रंग का नाम बनता है।
७) जिसका द्वितीय और तृतीय अक्षर मिलकर शाबाशी [धन्यवाद] सूचक शब्द बनता है।
८) जिसका चतुर्थ और पञ्चम अक्षर मिलकर दिन का प्रतिपक्षी शब्द बनता है।

९) जिसका प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ अक्षर मिलकर ऐसा नाम बनता है जिसका शांतिस्नात्र के दिन उपयोग होता है।
१०) जिसका दूसरा और चौथा अक्षर मिलकर एक किड़े [जन्तु] का नाम बनता है।
११) जिसका तृतीय और पञ्चम अक्षर मिलकर मारा जाने का सूचक बनता है।
१२) जिसका प्रथम और द्वितीय अक्षर मिलकर एक पुष्प का नाम बनता है।
१३) जिसका तृतीय और द्वितीय अक्षर मिलकर वायु का नाम बनता है।

पहेली नं. ६ – चार अक्षर का एक नाम :– ––––

१) जिसका प्रथम और चतुर्थ अक्षर मिलकर जल का नाम बनता है।
२) जिसका प्रथम और द्वितीय अक्षर मिलकर एक वर्ण का नाम बनता है।
३) जिसका तृतीय और चतुर्थ अक्षर मिलकर राजस्थान के एक गाँव का नाम बनता है।
४) जिसकी संधि विच्छेद होने पर अन्तिम तीन अक्षर मिलकर वस्त्र कर सूचक बनता है।
५) जिसकी संधि विच्छेद करने पर अन्तिम तीन अक्षर मिलकर आकाश वाचक शब्द बनता है।
६) सर्वाक्षर मिलकर तिरसठशलाका महापुरूषों में से किन्हीं महापुरूष के वस्त्र का नाम बनता है।

शब्दसागर ईनामी स्पर्धा (४) के उत्तर एवं परिणाम

परिणाम – प्राप्त उत्तरों में से २ प्रतियोगियों के उत्तर सही पाए गये। लकी ड्रॉ द्वारा प्रथम एवं द्वितीय की घोषणा कर पुरस्कार सम्बन्धित को भेज दिया गया है।

पुरस्कृत प्रतियोगी के नाम क्रमशः इस प्रकार है –

प्रथम :– श्री. महेन्द्र जे. संघवी – थाने, **द्वितीय :–** कु. निर्मला बी. जैन – थाने,

उत्तर – १) विप्रादेवी, २) वरकाणा, ३) मल्लि, ४) वाणह, ५) सुव्रतादेवी, ६) तिर्थंकर, ७) समाहि, ८) महापर्व, ९) पावतण, १०) जितशत्रु, ११) अन्यथा

वाक्य – सर्वथा प्राणातिपात विरमण व्रत

उपहार क्या देंगे ?

तपस्या, अनुष्ठानों, शादियों आदि विभिन्न मांगलिक प्रसंगो पर उपहार में बर्तन या दूसरी वस्तुयें न देकर ज्ञानोपकरण में विविध विषयों की पुस्तकें दें। सात्विक वांचन से मन स्वाध्याय में रत रहकर कभी जीवन में महत्वपूर्ण 'टर्निंग पोईंट' का निमित्त बन सकता है।

समाचार – दर्शन

जावरा में अ. भा. सौधर्मवृहत्तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ का दो दिवसीय अधिवेशन सम्पन्न
उपराष्ट्रपतिजी द्वारा जैनाचार्य श्री. जयंतसेनसूरिजी को अभिनन्दन ग्रन्थ अर्पित
राष्ट्र संत की उपाधि से सम्मानित

जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी आदि ठाणा की पावन निश्रा में ७ व ८ दिसम्बर १९९१ को जावरा में जैन रत्न श्री गगलदास हालचंद संघवी की अध्यक्षता में अ. भा. सौधर्म वृहत्पोगच्छीय जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ का विराट अधिवेशन आयोजित किया गया। ७ दिसम्बर को प्रातः ९–३० बजे आचार्य श्री द्वारा मंगलाचरण के पश्चात् श्री गगलभाई संघवी द्वारा ध्वजवंदन, दीप प्रज्वलित कर अधिवेशन का उद्घाटन किया गया। गुरूदेव के फोटो को माल्यार्पण श्री सेवन्तीभाई मोरखिया ने किया। श्री शांन्तिलालजी दसेडा द्वारा स्वागत भाषण के पश्चात् मंच पर विराजमान महानुभावों का रेशम की मालाओं से स्वागत किया गया। श्री सुरेन्द्र लोढा, श्री भँवरलाल छाजेड ने अधिवेशन में विचारणीय मुद्दों मध्यमवर्ग के आर्थिक विकास, छोटे ग्राम नगरों में जिनमंदिरो व पौषधशालाओं के निर्माण व जिर्णोद्धार की स्थायी योजना, देश में बढ रही हिंसा व अभक्ष्य भोजन के विरूद्ध अभियान, समाज के तीर्थों की व्यवस्था पर विचार करने पर विस्तृत प्रकाश डाला। तत्पश्चात् आचार्यश्री का प्रवचन हुआ।

द्वितीय सत्र में आये हुए प्रस्तावों पर विचारविमर्श करने हेतु विषय विचारणीय समिति गठित की जाकर श्री मोहनलाल खाबिया (मन्दसौर), श्री प्रतापजी मेहता (उज्जैन), श्री कुन्दनलाल काकडीवाला (आलीराजपुर), श्री जे. के. संघवी (थाने), श्री हरीभाई भणसाली (अहमदाबाद), श्री हिम्मतभाई वोरा (अहमदाबाद), श्री सज्जनासिंह लोढा (निम्बाहेडा), श्री हीरालाल शाखी (जालोर), श्रीमती कैलाश बहन कर्नावट (जावरा), श्री विनोदभाई (अहमदाबाद), श्री अनिल डुंगरवाल, श्री बाबुलालजी भारतीय (खाचरौद), श्री सेवन्तीभाई मोरखीया (बम्बई) आदि ने अपने विचारव्यक्त किये। आचार्य श्री के प्रवचन के पश्चात् सत्र समाप्ती की घोषणा की गयी।

रात्री कालीन सत्र में सर्वानुमति से अध्यक्ष श्री जैनरत्न सेठ गगलदास हालचंद संघवी, उपाध्यक्ष – श्री चैतन्यकुमार काश्यप, मंत्री श्री भँवरलालजी छाजेड, कोषाध्यक्ष – श्री शांतिलालजी जैन एवं अन्य पदाधिकारी बनाये गये। कार्यकारिणी सदस्यों की घोषणा भी की गयी। प्राप्त प्रस्तावों पर विचारविमर्श कर योग्य निर्णय लिये गये। (पदाधिकारियों, कार्यकारिणी के सदस्यों की सूची एवं पारित प्रस्ताव कार्यालय में प्राप्त होने पर प्रकाशित किये जायेंगे)

उपरोक्त कार्यक्रम श्री राजेन्द्र उपाश्रय, पिपलीबाजार – जावरा में सम्पन्न हुआ।

दूसरे दिन ८ दिसंबर को अधिवेशन समापन एवं श्रीमद् जयन्तसेनसूरि अभिनन्दन

ग्रंथ विमोचन समारोह का कार्यक्रम महात्मा गांधी विद्यालय के विशाल प्रांगण में रखा गया था। ठिक ९-३० बजे महोमहिम उपराष्ट्रपतिजी का स्वागत हेलीपेड पर त्रिस्तुतिक संघ के उपाध्यक्ष श्री चैतन्य काश्यप, परिषद के अध्यक्ष श्री सेवंतीभाई मोरखिया, सांसद श्री लक्ष्मीनारायण पाण्डे, विधायक श्री रघुनाथसिंह, पूर्व राज्य गृहमंत्री श्री भारतसिंह, मध्य प्रदेश के उच्चाधिकारी, जिल्हाधिश एवं महिलाओं में परिषद महिला विभाग की उपाध्यक्षा श्रीमती कोकिला भारतीय, श्रीमती कैलाश कर्नावट ने किया।

पिचहत्तर हजार वर्गफीट के विशाल शामियाने में सुसज्जित मंच पर उपराष्ट्रपतिजी श्री शंकर दयाळ शर्मा के पधारने के पश्चात् उन्होने गुरूदेव श्रीमद् राजेंन्द्रसूरिश्वरजी के चित्र को माल्यार्पण कर आचार्यश्री को नमन किया। मंच पर पुनः स्वागत के पश्चात सभी अतिथियों को बेजेस लगाये गये। समारोह में उपस्थित उपराष्ट्रपतिजी की धर्मपत्नी श्रीमती विमला शर्मा, म. प्र. शासन के लोक निर्माण मंत्री श्री हिम्मत कोठारी, राज्यमंत्री श्री गहलोत, सांसद श्री दिलीपसिंह भूरिया, लक्ष्मीनारायण पाण्डेय, पूर्व मंत्री श्री भारतसिंह एवं विधायक श्री रघुनाथसिंह आंजना भी उपस्थित थे। सभी का स्वागत संघ अध्यक्ष श्री गगलदास संघवी, उपाध्यक्ष श्री चैतन्य काश्यप, महामंत्री श्री भँवरलाल छाजेड, परिषद अध्यक्ष श्री सेवंतीभाई मोरखिया, मंत्री श्री सुरेन्द्र लोढा, जावरा संघ अध्यक्ष श्री शांतिलालजी दसेडा, परामर्शदाता श्री कन्हैयालालजी धाडीवाल आदि ने माल्यार्पण द्वारा किया।

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा प्रकाशित एक हजार पृष्ठों का विशाल 'श्रीमद् जयन्तसेनसूरि अभिनन्दन ग्रंथ' का विमोचन महामहिम उपराष्ट्रपतिजी श्री शंकरदयाल शर्मा के शुभ हस्तों से किया जाकर उन्होंने आचार्यश्री को ग्रंथ की प्रति अर्पित की एवं काम्बली ओढ़ा कर राष्ट्रसंत की उपाधि का प्रशस्तिपत्र अर्पित किया।

समारोह में उपराष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा ने अपने प्रभावी संबोधन में कहा कि इस अभिनंदन ग्रंथ से हमे यह बोध करना होगा कि देश की क्या परम्परा है? जैनधर्म ने मानव जाति को क्या संदेश दिया है तथा इस संदेश की इस समय कितनी प्रासंगिकता है। श्री शर्मा ने मानव को शुद्ध आचरण रखने की प्रेरणा देते हुए परिग्रह से दूर रहकर देशभक्ति एवं सादगी को अपनाने पर बल दिया।

राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी ने फरमाया कि हमें संकुचित विचारों को त्यागकर व्यापक दृष्टिकोण अपनाना होगा। आज फैशन व व्यसन मानव के कर्तव्य में बाधक है। सादगीपूर्ण जीवन बिताते हुए आहार तथा विहार में विकृति से अपने आप को बचाना चाहिए। राष्ट्र के प्रति हम अपना कर्तव्य निभायें व सही नागरिक होने का परिचय देवें। हम राष्ट्र में ऐसा वातावरण निर्मित करें कि प्राणी मात्र निर्भय होकर जिए, किसी जीव को न सताएं। जीवन से अहं की प्रवृत्ति को त्याग कर स्वार्थ को छोडे।

स्वागताध्यक्ष श्री चैतन्यजी काश्यप ने संघ अधिवेशन एवं ग्रंथविमोचन समर्पण समारोह में उपराष्ट्रपतिजी के आगमन को सौभाग्य बताया। श्री संघ के महामंत्री श्री भँवरलाल

छाजेड ने त्रिस्तुतिक संघ के अधिवेशन की जानकारी दी। परिषद के महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढा ने ग्रंथ विषयक जानकारी प्रस्तुत की एवं आचार्य श्री के जीवन पर प्रकाश डाला।

पूज्य जैनाचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी से उपराष्ट्रपति ने वासक्षेप ग्रहण किया व आचार्य श्री ने अपेक्षा की कि देश में अहिंसा का वातावरण बनाया जायेगा।

बम्बई में अ. भा. अहिंसा एवं शाकाहार संमेलन

बम्बई – ''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र और समाज एवं विशेषकर युवावर्ग अनिश्चितता व अनैतिकता की ओर आगे बढ़ रहा है। हिंसा, मांसाहार, अत्याचार, आतंकवाद चरमसीमा पर पहुंच गये हैं। ऐसी स्थिती में सदाचार एवं शाकाहार पर आस्था रखनेवाले संत–महात्माओं, बुद्धिजीवीयों की विशेष जवाबदारी हो जाती है कि अहिंसा की गौरवमयी परम्परा से वर्तमान को सुशोभित करते हुए भविष्य में लोगों को पथ प्रदर्शक बन सके'' – यह बात बम्बई में अ. भा. अहिंसा एवं शाकाहार सम्मेलन के तीन दिवसीय अधिवेशन के प्रारंभ में सम्मेलन के उद्देश्य को समझाते हुए आचार्य श्री सुधर्मसागरजी ने कही सम्मेलन का उद्घाटन बम्बई के मेयर श्रीमति बकुल पटेल ने दीप प्रज्वलित कर किया। विभिन्न धर्मों के प्रमुख धर्माचार्यों एवं विद्वानों ने भी पधारकर अधिवेशन को सम्बोधित किया। प्रसिद्ध संगीतकार श्री रविन्द्र जैन ने अपनी पार्टी के साथ गीत प्रस्तुत किये।

गुजरात के राजभवन में मांसाहार बंद

गुजरात के राज्यपाल श्री महीपाल शास्त्री ने 'करूणा' नामक पुस्तक का विमोचन करते हुए बताया कि राजभवन में ऐसी सख्त सूचना दी गयी है कि किसी भी अतिथि को मांसाहार नहीं परोसा जायेगा। भारतीय संस्कृति की प्रतिक तुल्य गाय को राजभवन में रखा जायेगा।

'शाकाहार का जीवन में महत्व' पर प्रवचन आयोजित

थाने (महाराष्ट्र) – वर्तमान में बढ़ रहे अंडे आदि मांसाहार के प्रचार को देखते हुए सर्वजन हितार्थ श्री ऋषभदेव स्वामी जैन धर्म टेम्पल व ज्ञाति ट्रस्ट के तत्वावधान में सुप्रसिद्ध व्याख्याता, चिंतक, 'तीर्थंकर' एवं 'शाकाहार क्रांती' के सम्पादक श्री डा. नेमीचंद जैन (इन्दौर) का जाहीर प्रवचन 'शाकाहार का जीवन में महत्व' विषय पर शुक्रवार दि. २० दिसम्बर को रात्रि ९ बजे आयोजित किया था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे – श्री ए. एल. अलसपुरकर (इन्डस्ट्रीयल कोर्ट जज – थाने)।

स्मरण रहे ट्रस्ट द्वारा पिछले दस वर्षों से संचालित श्री महावीर मानव क्षुधा तृप्ति केन्द्र के जरिये प्रतिदिन करीबन १५० असहायों व गरीबों को मुफ्त भोजन दिया जाता है।

राजगढ़ से श्री लक्ष्मणीजी तीर्थ छः रि पालक संघ

परमपूज्य राष्ट्रसंत साहित्य मनीषी तीर्थप्रभावक जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराज सा. आदि ठाणा एवं पू. साध्वीजी श्री हेत श्री जी म. सा. की शिष्याओं की निश्रा में राजगढ़ से श्रीलक्ष्मणीजी तीर्थ छः रि पालक संघका आयोजन राजगढ़ निवासी शा. शैतानमल फत्तेचंदजी बाफना परिवार की ओर से किया गया। संघ प्रयाण

दि. २३–१२–९१ पोस वदी २ सोमवार को प्रातः ७ बजे हुआ रास्ते में विभिन्न तिर्थों के दर्शन करते हुए २९–१२–९१ को श्री संघ सानन्द श्री लक्ष्मणीजी तीर्थ पर पहुंचा। दि. ३०–१२–९१ को संघ पति को माला परिधान कर कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हूआ।

शोक श्रद्धांजली

साध्वीजी हेमरत्नाश्रीजी कालधर्म को प्राप्त हुयी

मद्रास – ५ दिसम्बर को एक दुर्घटना में आचारचुस्त, अन्तर्मुख व विदुषी साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी का दुःखद अवसान हो गया। अपनी शिष्या (सांसारिक छोटी बहन) साध्वीजी संवेगश्रीजी के सफल ऑपरेशन के बाद वे अस्पताल से उनके साथ उपाश्रय लौट रही थी, तब रेल पटरी के पास से गुजरते हुए आवाज की घबराहट से गिर जाने के कारण ब्रेन हेमरेज हो जाने से अकाल कालधर्म को प्राप्त हुयी। समाचार सुनकर सारा नगर स्तब्ध रह गया। शाम चार बजे पार्थिव देह आराधना भवन में दर्शनार्थ रखा गया। दूसरे दिन विशाल जनसमूह द्वारा 'जय जय नंदा – जय जय भद्दा' 'साध्वीजी हेमरत्नाश्रीजी अमर रहे' के नारों के बीच दोपहर १–३० बजे अंतिम यात्रा प्रारंभ होकर तीन किलोमीटर की दूरी तयकर ३–३० बजे अग्नि संस्कार किया गया।

महाराष्ट्र के अमलनेर निवासी सुप्रतिष्ठित श्रावक नेमीचंदजी कोठारी के पिता ने भी दीक्षा ली थी। उनकी संतानो में तीन सुपुत्रियॉ, भाई मिश्रीमलजी की पांच पुत्रियॉ व दोनों बहनों की एक–एक सुपुत्री इस प्रकार कुल दस साध्वीजीयॉ संयम लेकर जिनशासन की शान बनी है। स्वयं नेमीचंदजी ने दीक्षा अंगीकार कर मुनिराज श्री नंदीश्वर विजयजी बनकर संयम जीवन जी रहे हैं। दिवंगत साध्वीजी श्री हेमरत्नाश्रीजी ने सं. २०२६ वैसाखवद ६ को अमलनेर में आचार्य श्री यशोदेवसूरीश्वरजी के करकमलों से चारित्र ग्रहण कर पू. साध्वीजी श्री. अनंतकीर्तिश्रीजी (संसारी बहन) की शिष्या बनी थी।

दिवंगत की पुण्य स्मृति में १२ दिसम्बर से १६ दिसम्बर तक पंचान्हिका महोत्सव आयोजित किया गया।

लाखणी – मोरखीया राजमलभाई चुन्नीलालभाई का ७० वर्ष की उम्र में स्वर्गवास ११–१०–९१ को हो गया। स्वर्गस्थ जीवदया प्रेमी, समाजसेवी एवं आराधक आत्मा थे। नवकार मंत्र रटन में विशेषतः लीन रहते थे।

लाखणी – श्री ताराचंदभाई डूंगरसी भाई मोरखीया का ९८ वर्ष की उम्र में ३१–१०–९१ को स्वर्गवास हो गया। स्वर्गस्थ इस उम्र तक भी नियमित प्रभु दर्शन, पूजा एवं नियमों के पालन में अडिग थे। लाखणी में उपाश्रय बनाने में उनका विशेष योगदान था। शाश्वत धर्म के प्रति उनके मनमें अपार स्नेह थे, वे इसका नियमित वांचन करते थे।

स्वर्गस्थ आत्माओं को 'शाश्वत धर्म' परिवार द्वारा हार्दिक श्रद्धांजली।

साभार – स्वीकार

– श्रीमद् जयन्तसेनसूरि अभिनन्दन ग्रंथ – सम्पादक परिषद : श्री सुरेन्द्र लोढ़ा, श्री जे. के. संघवी, श्री कीर्तीभाई हालचंद वोरा, श्रीमति कोकिला भारतीय, श्री सौभाग्यमल सेठिया, श्री अचलचन्द जैन, श्री भँवरलाल छाजेड़; प्रकाशक – अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद; प्राप्तिस्थान – शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका – थाने (महाराष्ट्र); मूल्य – दो सौ एक रूपये; पृष्ठ – एक हजार

श्रीमद् जयन्तसेनसूरि अभिनन्दन ग्रंथ के एक हजार पृष्ठों में लगभग आठसौ पृष्ठों को सृजनशील साहित्यक तथा सांस्कृतिक सामग्री से सुशोभित किया गया है, जब कि दो सौ पृष्ठ चतु:रंगी चित्रों से सजे हैं। ग्रन्थ के कोई छः सौ पृष्ठ केवल ग्रन्थनायक के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हैं। आज तक किसी भी ऐसे ग्रन्थ में ग्रन्थनायक के समग्र व्यक्तित्व को समेटने के लिए इतना लेखन नहीं हुआ है। शेष दो सौ पृष्ठ जैन संस्कृति से संबंधित विषयों से सम्बद्ध हैं। ग्रन्थ की निर्मिति में दो सौ लेखकों का योगदान है। इनमें से एक सौ लेखन पी. एच. डी. उपाधिधारी हैं जो अपने विषय को प्रमाणित तथा अधिकृत रूप में प्रतिपादन करने के अभ्यस्त के रूप में मान्य हैं। सम्पूर्ण ग्रंथ की सामग्री तेरह खण्डों में वर्गीकृत कर वैज्ञानिक रूप से संयोजित की गई है। ग्रंथनायक से संबंधित खण्ड हैं – वंदना, वसुधा–वैभव, विभूति, विविधा, व्याख्या, वैदुष्य आदि। विभूति खण्ड चार उपखण्डों से युक्त है – अभिनंदन, अभ्यर्थना, अनुभूति तथा अनुपम।

जैन आध्यात्म पर प्रकाश तीन प्रसंगों वाचना, विश्लेषण, विवेचन में दिया है। गुजराती खण्ड का नाम वैदुश्य एवं अंग्रेजी को विजन दिया गया है। संपादकीय का शीर्षक जहाँ वागर्थ है, वहीं परामर्शदाताओं तथा संस्था के पदाधिकारियों ने वाणी, विचार, वक्तव्य, विशेष आदि शीर्षकों के अन्तर्गत अपने विचार प्रक्षेपित करने का प्रयत्न किया है। ग्रन्थ में साहित्य की दृष्टि से कई नए प्रयोग किए गए हैं। महत्वपूर्ण लेखकों के लघु व परिचय सचित्र दिए गए हैं। बीस पृष्ठों की संपादकीय 'वागर्थ' में कई तथ्यों का स्पर्श किया गया है। ग्रंथनायक के समकालिन जैनाचार्यें की सूची संग्रहित है। ग्रंथनायक के व्यक्तित्व के हर पहलु को ग्रन्थ में छुआ गया है। जैन समाज में त्रिस्तुतिक समाज का अपना उल्लेखनीय स्थान है। ग्रंथनायक त्रिस्तुतिक परम्परा के ही हैं। इस ग्रंथ में वासक्षेप खंड के अंतर्गत त्रिस्तुतिक परम्परा पर न केवल शोध निबन्ध है बल्कि इस परम्परा के पूर्वाचार्यों, महत्वपूर्ण मुनियों व श्रमणियों के परिचय भी दिए गए हैं। अभिधान राजेंद्र कोष का, वर्तमान मुनिमंडल तथा श्रमणीवर्ग के परिचय रेखांकन योग्य हैं। वाचना खण्ड के लेखकों में जैन समाज के प्रभावशाली आचार्यों का समावेश है। जैनाचार्य श्री आनंद ऋषिजी, युवाचार्य श्री शिवमुनिजी, युवाचार्य श्री महाप्रज्ञजी, जैनाचार्य श्री सुशील सूरीश्वरजी महाराज, महोपाध्याय श्री चंद्रप्रभ सागरजी

आदि के हस्ताक्षर इस खण्ड में जैन दर्शन के गहन विषयों का पारदर्शन करवा रहे हैं। काव्य खण्ड वंदना में कवियों की तुलिका ग्रंथनायक की अर्चना में अर्पित हुई है। हिन्दी, गुजराती, संस्कृत तथा अंग्रेजी चार भाषाओं में लेखकों की रचनाएं प्रकाशित हैं। जैन समाज की काफी संख्या गुजराती भाषी है। अतएव गुजराती तथा अंग्रेजी के प्रसंग स्वतंत्र रूप से पृथक दिए हुए हैं।

ग्रंथ में संग्रहित दो सौ पृष्ठों की चित्रावली भी विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत प्रसंगों में विभाजित की गई है। ग्रंथनायक का आशीर्वाद कई उच्च स्तर के राजनेताओं ने प्राप्त किया है, साथ ही जैन समाज के लब्ध प्रतिष्ठित आचार्यों से उनके सुमधुर सम्बन्ध हैं। ऐतिहासिक मिलन तथा गरीमापूर्ण आवर्त खण्डों में कई अनुपलब्ध चित्र हैं जो संग्रहणीय होंगे। जीवन यात्रा के अंतर्गत ग्रंथनायक के गृहस्थाश्रम से लेकर पचपन वर्ष की उम्र तक के चित्रों को आयु के अनुसार क्रमबद्ध करने का अनुठा प्रयास किया गया है। दो सौ पृष्ठों में कम से कम पन्द्रह सौ चित्र समाहित किए गए हैं।

– तीर्थंकर (वरक विशेषांक) – संपादक : डा. श्री नेमीचन्द जैन; हीरा भैया प्रकाशन, ६५ पत्रकार कॉलोनी, कनाडिया मार्ग, इन्दौर (म. प्र.); वर्ष – २१; अंक : ६–७; मूल्य – तीस रुपये

यह विशेषांक वरक के विषय में सारे तथ्यों को इमानदारी के साथ उजागर करता है। इसके निर्माण की पूरी कहानी चित्रों सहित एवं बनानेवालों से प्रत्यक्ष बातचीत के साथ दी गयी है। वरक या तबक संस्कृत पाली या अपभ्रंश शब्द न होकर अरबी शब्द है। 'वरख' की परम्परा अति प्राचीन नहीं है, न ही आगम में कहीं इसका उल्लेख है। पिछले दो सौ–तीन सौ सालों में मुगलों के सम्पर्क से इसका विकास हुआ है। आज भी इसके बनाने की संपूर्ण प्रक्रिया इसी वर्ग के हाथ में है। वह अनजाने में अपनी सम्मोहकता के कारण हमारी पूजा और सज्जा विधि का एक अवयव बन गया है, अन्यथा वह त्याज्य और निंद्य है। वरक़ का हमला सिर्फ धर्म के आचार पक्ष पर ही नहीं वरन् औषधियों एवं खाद्य पदार्थों पर भी हुआ है। पहले हिरणों की, एवं अब भेडोंकी आंत या चमडे की झिल्ली उतारकर उन पर रंगाई की प्रक्रिया की जाती है। लगभग १५० जडी बुटियों के अर्क में भिगोकर उसे उष्मित किया जाकर उसके बीच चांदी की पतरी को रखकर कूटा जाता है। सारी कहानी को जानकर निष्पक्ष दृष्टि से विचार करें तो मन में इसकी शुद्धता एवं उपयोगिता पर प्रश्नचिन्ह जरूर लग जाता है। जिज्ञासुओं को यह पुस्तक मंगवाकर एक बार आवश्यक एवं सत्य जानकारी हेतु अवश्य अवलोकन करनी चाहिये।

– श्री अनुयोग द्वार सूत्र (गुजराती) – लेखक : पन्यास श्री पूर्णानन्दविजयजी (कुमारश्रमण); प्रकाशक : जगजीवनदास कस्तूरचंद शाह संघवी, मु. पो. साठंबा (गुजरात) पिन – ३८३ ३४०; पृष्ठ ५४० मूल्य – पेंतीस रूपये

जैन शासन में वर्तमान में ४५ आगम मान्य है। अनुयोगद्वार सूत्र को आगमों

का प्रवेश द्वारा कहा गया है। इसका व्यवस्थित परिशीलन कर साधक आत्मा आगमों में सरलता से प्रवेश कर सकता है। यह सूत्र चूलिका के रूप में है। इसके मूल १८७९ श्लोक हैं। चूर्णि २२६५ श्लोक प्रमाण, वृहद्वृत्ति ५८०० श्लोक प्रणाम एवं लघुवृत्ति ३००० श्लोक प्रमाण वर्तमान में उपलब्ध है। प्रस्तुत पुस्तक में गुजराती सरल भाषा में विवेचन किया गया है।

– **मुक्ति महल का राजमार्ग** – लेखक : मुनिराज श्री जयानन्दविजयजी; प्रकाशक : कबदी सुखराजजी चमनाजी, मु. पो. धाणसा, जिला – जालोर (राजस्थान); प्राप्ति स्थान : शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका – थाने (महाराष्ट्र) पृष्ठ ८४

दान, शील, तप और भाव पर विस्तृत विवेचन किया गया है। जिज्ञासु पाठक दो रूपये के पोस्टेज स्टेम्प उपरोक्त पते पर भेजकर मंगवा सकते हैं।

– **कामोविजेता जगतो विजेता** – लेखक : मुनिराज श्री जयानन्द विजयजी; प्रकाशक व प्राप्तिस्थान – श्री भीनमाल जैन संघ, जिला – जालोर (राजस्थान); पृष्ठ ३२

चार रंगी मुख पृष्ठ एवं दो रंगी ओफसेट मुद्रण के साथ मुद्रित इस पुस्तक में शील के विषय में ११५ सुवाक्य दिये गये हैं। जिज्ञासु पाठक प्रति पुस्तक एक रूपये का पोस्टेज स्टेम्प भेजकर मंगवा सकते हैं।

– **शीलत्व की सौरभ** – लेखक – आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी; प्रकाशक श्री राजराजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट – अहमदाबाद/बम्बई; प्राप्ति स्थान – शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका – थाने (महाराष्ट्र); मूल्य – पांच रूपये

शीलधर्म के अलौकिक उपासक–पालक विजय सेठ – विजया सेठाणी का जीवन वृत्तांत दिया गया है। चतुरंगी कवरपृष्ठ के साथ ऑफसेट में सुंदर प्रकाशन है।

– **मनवा! पल पल बीती जाए** – लेखक, प्रकाशक व प्राप्ति स्थान – उपरोक्त अनुसार; मूल्य – बीस रुपये; पृष्ठ १९२

चतुरंगी मुखपृष्ठ से सजी एवं ऑफसेट में छपी मधुर व्याख्याता आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी के १९ व्याख्यानों का संकलित संग्रह है। जिज्ञासु पाठकों के लिए स्वाध्याय हेतु उपयोगी है।

– **जागते रहो** – लेखक : श्री एम. जे. देसाई; प्रकाशक व प्राप्तिस्थान – श्री कमलेश जयन्तिलाल शाह, *साईनिकेतन, १ ला माला, ८०४ बी, डा. आंबेडकर रोड, बम्बई – १४*; मूल्य – वाचन, मनन, पृष्ठ ४४

जैन प्रकाश के सम्पादक श्री. एम. जे. देसाई द्वारा लिखे गये वर्तमान स्थितीयों की समीक्षा स्वरूप सम्पादकीय लेखों का संकलन कर प्रकाशित किया गया है।

– **अंड्याविषयीची १०० तथ्ये** (मराठी) – लेखक – डॉ. नेमीचन्द; प्रकाशक; संघवी कुंदनमल भुताजी एन्ड कं., जामली नाका – थाने, प्राप्ति स्थान – शाश्वत धर्म कार्यालय

जामली नाका – थाने (महाराष्ट्र) पृष्ठ ३२; मूल्य – एक रूपया

अपनी खपत बढाने के लिये व्यापारी अंडे को शाकाहारी तक कह कर सफेद झूठ बोलकर भ्रम पैदा कर रहे हैं। दूसरी ओर वैज्ञानीक अनुसंधानों ने यह सिद्ध कर दिया है कि अंडा मांसाहार है व स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। इन सारे तथ्यों को वैज्ञानिक कारणों के साथ डा. नेमीचन्दजी ने हिन्दी में 'अंडे के बारे में १०० तथ्य' पुस्तक प्रकाशित की थी। जिसकी पांच महिने में एक लाख प्रतियॉ बिक चुकी हैं। एवं उर्दू भाषा में भी अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। तमिल, बंगाली एवं गुजराती में अनुवाद शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है। प्रस्तुत पुस्तक मराठी में अनुवाद है। दो रंगी विविध चित्रों के साथ ऑफसेट में छपी पुस्तक का मूल्य प्रचारार्थ एक रूपया रखा गया है। जीवदया प्रेमियों एवं अहिंसा व शाकाहार में विश्वास रखने वालों को यह पुस्तक पढनी चाहिये व बहुसंख्या में खरीदकर प्रचारार्थ बांटनी चाहिये।

– श्री आत्मविशुद्धि (गुजराती) – लेखक : आचार्य श्री केसरसूरीजी महाराज, प्रकाशक व प्राप्तिस्थान : श्री प्रेमजी हीरजी शाह १८०/३ ए, गांजावाला एपार्टमेन्ट, बोरीवली, (बम्बई) ४०० ०९२, मूल्य : सदुपयोग; पृष्ठ ९८

आत्मा के स्वरूप, आराधना एवं आत्मप्राप्ति के साधनों वगैरह को अठराह प्रकरणों में सरल भाषा में समझाने का प्रयत्न किया गया है। पक्की बायडिंग एवं छपाई सुंदर है।

गाडराटा गांव में एक भी मांसाहारी या शरावी नहीं है

राजस्थान जिला झुंझनु के ग्राम गाडराटा गांव में एक भी मांसाहारी या शराबी नहीं हैं। निर्वाण राजपूतों के इस गांव ने दस पीढ़ियों से शराब और मांस को छोड़ दिया है। इस गांव के लड़के दूसरे गांव की लड़की से शादी करे तो पहली शर्त यह है कि उसको शराब और मांस से दूर रहना होगा। कोई भी व्यक्ति शराब पीकर उस गांव में नहीं आ सकता। गांव की इस विशिष्ट प्रकृति के कारण यहां प्रसिद्ध संत सुन्दरदास की मान्यता है। इस गांव में लड़ाई – झगड़ा कभी नहीं होता। यह एक आदर्श गांव है।

– साभार 'शाकाहार क्रान्ति'

इज़राइल का एक शुद्ध शाकाहारी ग्राम

शाकाहारी जीवन पद्धति में आस्था रखनेवाले इज़राइलियों ने १९५८ में अमिरिम गांव स्थापित किया था। गैलिली समुद्र की मनोरम ढ़लान पर बसा हुआ यह एक सुन्दर गांव है। अमिरिम बाग बगीचा हराभरा भूखंड है। वहां सेबफल, खूबानी, बादाम, अंगुर, नासपाती और अनार ऊगाए जाते हैं।

इस गांव की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां न कोई रसायन और न कोई कीटनाशी दवा का छिड़काव सब सारा प्राकृतिक। गांव के सभी लोग शुद्ध शाकाहारी हैं। कोई भी अपरिचित व्यक्ति आए तो अत्यन्त स्वादिष्ट शाकाहारी भोजन कराते हैं। इसके बारे में अधिक जानने के इच्छुक 'फिलिप, अमिरिम, इजराइल' से सम्पर्क करें।

– साभार 'शाकाहार क्रान्ति'

समाचार – सार

- **अलीराजपुर (म. प्र.)** – स्थानीय सिविल हास्पिटल द्वारा आयोजित १ वर्ष के बच्चों की स्वास्थ्य प्रतियोगिता में कीर्ति कमलेश कुमार काकड़ीवाला प्रथम रहे।

- **लक्ष्मणीजीतीर्थ** – प्रतिवर्षानुसार दिनांक १६–१२–९१ को श्री लक्ष्मणीजीतीर्थ पर मूलनायक श्री पद्मप्रभुजी श्री महावीर स्वामीजी एवं श्री आदिश्वरजी भगवान के ध्वजारोहण का लाभ स्थानीय समाज के विभिन्न महानुभवों ने लिया।

- **दादर – बम्बई** – स्व. श्रीमद् विजय कीर्तिचंद्रसूरीश्वरजी म. सा. की प्रथम पुण्यतिथी एवं साध्वीजी श्री मृगनयनाश्रीजी म. सा. के ५०० आयंबिल तप की पूर्णाहुति निमित्ते एकादशान्हिका महोत्सव का आयोजन दि. १६–१२–९१ से २६–१२–९१ तक विविध पूजन एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों साथ मनाया गया। साथ ही दादर से थाने तीर्थ की यात्रा हेतू छः 'रि' पालित संघ का भी आयोजन दि. २७–१२–९१ से २९–१२–९१ तक किया गया।

- **बम्बई** – श्री आहोर जैन चेरिटेबल ट्रस्ट (बम्बई) की मिटींग में सिलाई मशीन वितरण, विकलांगों को ट्रायसिकल, बच्चों को मुफ्त पुस्तकें आर्थिक दृष्टि से कमजोर साधर्मिक बन्धुओं को सहयोग हेतु आर्थिक सहायता दिये जाने के बाबत एवं आहोर (राज.) में पुराने बस स्टेण्ड पर पीने के पानी हेतु वाटर कुलर लगाने सम्बन्धी निर्णय लिया गया।

- **अलीराजपूर** – स्थानीय शाखा परिषद के वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें अध्यक्ष – श्री प्रफुल्ल कुमार, सचिव – श्री कमलेशकुमर, कोषाध्यक्ष – श्री अनिलकुमार एवं अन्य पदाधिकारी सर्वानुमति से निर्वाचित किये गए।

- **अलीराजपूर** – शाखा परिषद द्वारा स्थानीय सिविल हास्पिटल को मोतियाबिंदु के आप्रेशन में काम आनेवाली इलेक्ट्रानिक मशीन एक सादे समारोह में भेंट की। इस अवसर पर जैन समाज के अतिरिक्त नगर के गणमान्य व्यक्तियों एवं अन्य समाज के प्रमुखों की उपस्थिति में नगर के नेत्र चिकित्सक डॉ. तोमर ने मशीन की कार्य प्रणाली से अवगत कराते हुए अस्पताल की इस कमी को दूर करने में जैन समाज के द्वारा दिये गये सहयोग के लिये धन्यवाद दिया। कुक्षी के श्री पोराणिकजी ने शाकाहार के सम्बन्ध में जानकारी दी एवं पदाधिकारीयों ने परिषद की ओर से मानवसेवा के प्रत्येक कार्य में तन–मन–धन से सहयोग देने की घोषणा की।

- **इन्दौर (म. प्र.)** – कुन्द कुन्द ज्ञानपीठ इन्दोर द्वारा जैन विद्या संगोष्ठी का दो दिवसीय भव्य कार्यक्रम का आयोजन १२ एवं १३ जनवरी १९९२ को उदासीन आश्रम तुकोगंज में किया जा रहा है। इस अवसर पर ज्ञानपीठ द्वारा आयोजित अ. भा. लेख प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जाएगा।

- **मुलुंड – बम्बई** – जैनसाहित्य को विश्व में विशिष्ठ स्थान दिलवाने एवं जैन धर्म के प्रचार प्रसार हेतु दिल्ली में विश्व पुस्तक मेला आयोजित किया जा रहा है अतः प्रकाशकों वितरकों और लेखकों आदि से विनम्र अनुरोध है कि मेले से सम्बन्धित जानकारी हेतु शीघ्र ही पत्रव्यवहार करें। **सम्पर्कसूत्र** – गीता जैन १२, हीराभुवन वी. पी. रोड़ मुलुन्ड (प). बम्बई–८०

- **कोबा** – श्रीमद् राजचंद्र आध्यात्मिक साधना केन्द्र में विद्या–भक्ति–आनंदधाम का प्रतिष्ठोत्सव ७–८ व ९ दिसम्बर को त्रिदिवसीय कार्यक्रम में सम्पन्न हुआ। श्रीमद् राजचंद्रजी, कुंदकुंद स्वामी आदि के चित्रपटों की स्थापना की गयी। इस अवसर पर विविध धार्मिक अनुष्ठानों के साथ विद्वानों की धार्मिक गोष्ठी का आयोजन भी किया गया।

- **रतलाम** – पू. बालाचार्य मुनि श्री योगीन्द्रसागरजी महाराज की निश्रामें अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा शाकाहार विश्व–धर्म सम्मेलन का त्रिदिवसीय विशाल आयोजन दि.६–७ एवं ८ दिसम्बर को किया गया जिसमें देश–विदेश के कई गणमान्य महानुभावों एवं साधु साध्वी भी सम्मिलित हुए इस अवसर पर उपराष्ट्रपति द्वारा मुनि श्री योगीन्द्र सागरजी द्वारा रचित दो कृतियों ('स्मरणिका', एवं 'अहिंसासूर्य') का विमोचन किया गया।

- **पेदअमीरम्** – मुनिराज श्री दिव्यरत्नविजयजी आदि ठाणा ५ की निश्रा में पेदअमीरम् तीर्थ में उपधान तप की आराधना में १३१ आराधक शामिल हुए हैं। मालारोपण २१ जनवरी को होगी।

- **इंदौर** – आचार्य पुष्पदंत सागरजी का आगमन २६ दिसंबर को हुआ। १ जनँवरी को उनके जन्म दिवस निमित्त विभिन्न धर्म जागृति के कार्यक्रम आयोजित किये जावेंगे।

- **गुंदुर** – आचार्य श्री वारिषेणसूरीश्वरजी का ३४ वॉ दीक्षा दिवस निमित्त २१ दिसम्बर को सामायिक, गुरुपूजन, संघपूजन, जीवदया एवं गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। २२ दिसम्बर को ३०० आराधकों ने सामुहिक आयंबिल किये। ३० दिसम्बर को पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक के अवसर पर आपके सानिध्य में ह्रींकार तीर्थ में पद यात्री संघ जायेगा।

नये प्रकाशन उपलब्ध हैं –

☆ **मनवा पल पल बीती जाये !** (मूल्य – बीस रुपये)
१९ प्रवचनों का संग्रह/पृष्ठ १९२/पक्की बाईंडींग

☆ **शीलत्व की सौरभ** (मूल्य – पांच रुपये)
विजय शेठ शेठाणी की कथा

☆ दोनों पुस्तके चार रंगी आकर्षक कवर पृष्ठ के साथ ऑफसेट में मुद्रित

लेखक – पू. आचार्यश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी 'मधुकर'
प्रकाशक – श्री राजराजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट – अहमदाबाद/बम्बई
प्राप्तिस्थान – शाश्वतधर्म कार्यालय, जामली नाका – थाने (महाराष्ट्र)

આજન્મા બાળકની નોંધપોથી

ઓક્ટો-૫—આજે મારા જીવનની શરૂઆત થઈ મારા માતા પિતા હજી આ જાણતા નથી હું, સફર જનતા બીજ ખેટલી નાની છું-પણ મારૂં અસ્તિત્વ સ્થાપિત થઈ ગયું છે, હું અસ્તિત્વમાં આવી ગઈ છું. હું એક છોકરી થઈશ. મારા વાળ કાળા હશે અને કાળી આંખો હશે. બધું જ બરાબર વ્યવસ્થિત થઈ ગયું છે. એ હકીકત પણ, કે મને ફૂલો ખૂબ જ ગમશે.

ઓક્ટો-૨૩—કોઈ કહે છે કે હજી હું એક સાચી વ્યક્તિ નથી. ફક્ત મારી માતાનું જ અસ્તિત્વ છે. પર જેવી રીતે એક રોટલીનો નાનો ટુકડો રોટલી જ છે તેવી રીતે હું પણ એક સાચી વ્યક્તિ છું મારી માતા અને હું બન્ને સાચી વ્યક્તિ છીએ.

ઓક્ટો-૨૩—મારૂં મોં ખુલવાની હવે શરૂઆત થઈ છે. જરા વિચારો તો, એકાદ વર્ષમાં તો હું હસતી અને બોલતી થઈ જઈશ, હું જાણું છું કે મારો પહેલો શબ્દ "મા" હશે!

ઓક્ટો-૨૫—આજે મારુ હૃદય ધબકવાનું શરૂ થઈ ગયું. હવે આજથી મારી બાકીની જીંદગી સુધી એ અટક્યા વગર ધબક્યા કરશે. અને ઘણાં વર્ષો પછી એ થાકી જશે અને ધબકવાનું અટકી જશે. એટલે હું મૃત્યુ પામીશ.

નવેમ્બર-૨—હું દરરોજ થોડી થોડી મોચી થાઉ છું. મારા હાથ અને પગને આકાર મળવાના શરૂ તયા છે. પણ, મારા આ નાના પગ મને મારી માના હાથ સુધી પહોંચાડે અને આ નાના હાથ ફૂલો ભેગા કરે, અને માતા-પિતાને વળગે, એ માટે હજી મારે લાંબો સમય રાહ જોવાની છે.

નવેમ્બર-૧૨—ટચુકડી આંગળીઓ મારા હાથ પર આકાર લેવા માંડી છે. ઓહ! કેટલી નાની છે એના વડે હું મારી માના વાળ ઓળીશ.

નવેમ્બર-૨૦—આજે જ ડોકટરે "મા"ને મારા અસ્તિત્વની જાણ કરી ઓહ! એ કેટલી ખુશ તઈ હશે. મા! તું ખુશ છે ને !!!

નવેમ્બર-૨૫—મારા માતા-પિતા કદાચ મારા માટે નામ વિચારતા હશે. પણ તેઓ તો હજી જાણતા પણ નથી કે હું છોકરી છું. મને 'મીરાં' કહેવડાવવું ગમશે. હું મોટી થતી જાઉ છું.

ડીસેમ્બર-૧૦—મારા વાળ વધે છે. એ લીસા અને ચળકતા છે. મા ના વાળ કેવા હશે ?!!!

ડીસેમ્બર-૧૩—હવે હું થોડું જો, શકું છું મારી આજુબાજુ અંધારૂં છે. જ્યારે મા મને આ સૃષ્ટિ પર લાવશે ત્યારે બધું જ પ્રકાશિત અને ફૂલોથી ભરપૂર હશે, પણ મને તો સૌથી વધારે મારી માને જોવી છે. મા, તું કેવી લાગે છે?

ડીસેમ્બર-૨૪—"માં" ને મારા હૃદયના **ધી**મા ધબકારા સંભળાતા હશે! કાઈ બાલકો આ દુનિયામાં થોડા નબળા આવે છે. પણ મારું હૃદય મજબૂત અને તંદુરસ્ત છે. એ કેવું એક સરખું ધબકે છે. ધબ...ધબ...ધબ...ધબમાં! તને એક તંદુરસ્ત નાની દિકરી મળશે.

ડીસેમ્બર-૨૮—આજે મારી મા એ મને મારી નાખી.

સુનંદા

-પં. શ્રી પૂર્ણાનન્દ વિજયજી 'કુમાર શ્રમણ'

"ચાર પગા જાનવરોના ચામડાથી માનવ સમાજનું ઠંડી-ગરમી અને કાંટાળા માર્ગથી નિશ્ચિતરૂપે રક્ષાણ જ થયું છે. જ્યારે રૂપે મંડેલું. સંયમ વિનાની નારીનું ચામડું તો ભગવાન જાણે! મોહાંધ અને કામાંધ બનેલા કેટલાય જુવાની. આઓના યૌવનધન-આધ્યાત્મિક જીવન-ખાનદાની ધર્મ અને વિદ્યાર્થી જીવનના સત્યાનાશ માટે કામે આવ્યું હશે?" "જ્યારે સંયમ-શિયળ અને એક પતિવ્રતધારિણી નારીનો બુદ્ધિ-વૈભવ અનેકાનેક માનવોના ઉદ્ધારનું કારણ બન્યું છે."

આ બિચારો દયાપાત્ર હાથી મારા રૂપમાંમોહાંધ બનીને "બિન ખાધા, બિન ભોગવ્યા ફોગટ કર્મ બંધાય" આ ન્યાયે પોતાના કેટલાય ભવોમાં વિના મોતે મર્યો છે. ગત ભવોની અતૃપ્ત વાસનાના કારણે આ ચાલુ ભવમાં હાથીના શરીરમાં પણ કામવશ બનીને તોફાને ચડ્યો છે અને આખાય નગરને ભયગ્રસ્ત બનાવી ત્રાહિમાં બોલાવી રહ્યો છે. કામવેદની શરાબની દશ બોટલાના નશામાં મસ્ત બનેલાં આ જાનવરને વશ કરવાની તાકાત પણ કોની? શસ્ત્રધારી સિપાઈઓ લાચાર હતાં. બુદ્ધિ વૈભવના માલિક મંત્રીઓ કિંકર્તવ્યમૂઢ હતાં અને રાજા લમણે હાથ દઈને દિશાભ્રમ માનવની જેમ આકાશને જોઈ રહ્યો હતો, તેવા વિકટ સમયે દયાપાત્ર બનેલા નાગરિકો ભયના માર્યા ચારે તરફ દોડાદોડ (Left Right) કરી રહ્યાં હોય તેમાં શું આશ્ચર્ય?

આવી રીતના ભયંકરતમ કટોકટીના સમયે જૈન ઉપાશ્રયમાં પોતાના સંયમધનની રક્ષા કરનારી, જગતના જીવોના મોહ, કામ-ક્રોધ તથા લોભના નશાને સમાપ્ત કરાવી તેમના કલ્યાણને ઈચ્છનારી, જગદંબા સ્વરૂપ 'સુનંદા' નામના સાધ્વીજી મહારાજે નગરની આવી બેહાલ અવસ્થાને જોયા પછી પોતાનું સમ્યગ્જ્ઞાન રૂપી ત્રિશૂલ અને સમ્યક્ચારિત્રરૂપી સુદર્શનચક્રને હાથમાં લઈને ઉપાશ્રયથી બહાર આવ્યા અને જે માર્ગથી તોફાન મચાવતો, હાટહવેલીઓને નષ્ટભ્રષ્ટ કરતો તથા વચ્ચે આવતાં બાળબચ્ચાઓને ચગદતો હાથી આવી રહ્યો હતો, તે જ માર્ગે સાધ્વીજી તે હાથીની સન્મુખ જઈ રહ્યાં હતાં. ગામના લોકોએ સાધ્વીજીને રોકવાનો પ્રયત્ન કરતાં કહેતા હતાં કે :- મહારાજ! આ તોફાને ચડેલા હાથીની સામે જવાનું કામ તમારૂં નથી જ્યાં મૂછાળા મર્દોના પણ મદ ઉતરી ગયા હોય ત્યાં તમારા નારી શરીરનું શું ગજું?

જન્મતાં જ ભ્રમજ્ઞાન તથા મિથ્યાજ્ઞાનના કારણે જેઓ પૂર્વગ્રહવાસિત છે તેઓએ સ્ત્રી માત્રને અબળા, શક્તિહીન ઈત્યાદિ શબ્દોથી ભલે નવાજી હોય તો પણ તેમણે સમજવું જોઈએ કે 'શક્તિ' કેવળ પુરૂષના શરીરમાં કે સ્ત્રીના શરીરમાં નથી રહેતી પરંતુ કેળવાયેલા આત્મામાં શક્તિનો વાસ છે, પછી ભલે તે સ્ત્રી હોય કે પુરૂષ. તેથી પુરૂષોમાં તે શક્તિ વધારે હોય કે સ્ત્રીમાં ઓછી હોય તે માન્યતા ખોટી છે. બેશક! પુરૂષોને તેમાં વધારો

કરવાના સાધનો સરળતાથી મળી રહે છે, જ્યારે સ્ત્રી પુરૂષને વશ બનેલી હોવાથી તે પોતાનો વિકાસ શીઘ્રતાથી કરી શક્તી નથી, અથવા સ્વસ્ત્રી ને છોડી ને પરસ્ત્રી (કન્યા, વિધવા, ભાભી, સાળી, પડોસણ કે પોતાની વિદ્યાર્થિની અથવા સહપાઠિની) પ્રત્યે માતૃત્વભાવ રાખવામાં અને કેળવવામાં પુરૂષ જાત લગભગ નિષ્ફળ ગયેલી હોવાથી, પુરૂષથી ભયભીત બનીને જીવન પૂર્ણ કરતી સ્ત્રી પોતાની આત્મશક્તિમાં વધારો કરી શક્તી નથી. માટે જ ભયભીત બનીને જીવનયાપન કરતી સ્ત્રીના અભિશાપે પુરૂષ જાતે પોતાના ગુપ્ત પાપાચરણોને સ્વાધીન કરવામાં સફળતા મેળવી નથી તે પણ એક સત્ય છતાં કઠોર અને અપ્રિય હકીકત માન્યા વિના છુટકો નથી.

પંચમહાવ્રતધારિણી સુનંદા સાધ્વીજી ઉપરના બધાય કારણોથી મુક્ત બનેલા હોવાથી તેમના જીવનમાં શિયળ (નૈષ્ઠિક બ્રહ્મચર્ય) ની સુવાસ છે, આંખોમાં જીવ માત્ર પ્રત્યેનો પ્રેમ છે, દિલમાં પતિત અને દલિત જીવો પ્રત્યે કારૂણ્ય છે, અને દિમાગમાં જીવ માત્ર પોતાના દુર્ગણોથી મુક્ત બને તેવી પવિત્રતમ ભાવના છે, માટે જ જૈન સાધ્વીજી કોઈનાથી પણ ભયભીત હોતી નથી.

દેખતાં દેખતાં હાથી અને સાધ્વીજી લગભગ એક જ રેખાંશ પર નિકટમાં આવી ગયા હતાં. ત્યારે પણ હાથીની સૂંઢ તોફાનમાં કૂદાકૂદ કરી રહી હતી. તે સમયે જ ચાંદીની ઘંટડી જેવા અવાજે સાધ્વીજીએ કહ્યું કે-રૂપસેન! ઓ રૂપસેન! હજુ તારે કેટલા ભવો બગાડવાના છે? હાથીના શરીરના આણુ આણુએ કામવાસનાનું જોર હતું અને સાધ્વીજીના શરીરના આણુ આણુમાં બ્રહ્મચર્યનો પ્રકાશ હતો.

ફરીથી સાધ્વીજીએ કહ્યું કે-એક સમયનો કામદેવ તુલ્ય તું રૂપસેન હતો અને હું સુનન્દા નામે રાજપુત્રી હતી. તારા મારા વચ્ચે કામરાગ જન્મ્યો, વધ્યો પણ કર્મરાજાની કુટિલતાના કારણે તારો મારો મિલાપ ન થયો અને તું વિના મોતે મરીને મારી કુક્ષિમાં અવતર્યો. ગર્ભનાશના ઔષધથી તને મૃત્યુના મુખમાં પ્રવેશ કરાવનારી હું જ હતી. પછી તો ક્રમશ: સર્પ, કાગ, હંસ અને મૃગના શરીરમાં તું અવતર્યો. તે બધાય શરીરોમાં કયાંય પણ સંસારસુખને મેળવ્યા વિના જ મારા પતિના હાથે તું મરણશરણ બન્યો. મૃગના ભવમાં રહેલા તારા શરીરનું માંસ અમે આનન્દપૂર્વક ખાઈ રહ્યાં હતાં તે સમયે એક મુનિરાજ ધર્મલાભ આપીને ગોચરીએ પધાર્યા, અમને જોઈને હસ્યા, હસવાનાં કારણમાં તેમને તારો મારો સંબંધ અથથી ઈતિ સુધી કહ્યો અને મને ધ્રુજારી આવી. સંસારની અસારતા અને વિષય વાસનાના પાપે ખાધા-પીધા વિના પણ કેટલા ઘોરાતિઘોર પાપો બંધાય છે તેનો ખ્યાલ આવ્યો અને હું સંયમ માર્ગે આવી. તું આજે છઠ્ઠા ભવે હાથીના અવતારમાં છે. **વડના બીજની જેમ કામવાસનાનો એક નાનકડો અંકુરો પર માનવને કેટલાય દુ:ખોમાં ધસડી મારે છે** તે તારા ઉદાહરણથી જ જાણ્યું. માટે છ-છ અવતારો સુધી કામસુખથી વંચિત રહેનારા રૂપસેન! હવે તારા જીવનમાંથી વિષય રૂપી વિષને ઓકી નાખ. સ્વસ્થ થા, સરળ બન અને અરિહંત પરમાત્માના શાસનને જાણી લે. ઓ પ્રિય રૂપસેન! તારો નિસ્તાર, ઉદ્ધાર અને ઉર્ધ્વીકરણ થવામાં આનાથી બીજો માર્ગ નથી.

સર્વથા સરળ શબ્દો હતાં. તેથી તે હાથી સમજ્યો હોય તેમ પોતાની સૂંઢને મુખમાં નાખી દીધી અને અશ્રુની ધાર સાથે સાધ્વીના ચરણોમાં માથું ઢાળી દીધું.

રાજધાનીના હજારો-લાખો માનવોએ આ પ્રસંગ પોતાની સગી આંખે જોયો અને તાળીઓના ગડગડાટ સાથે નારીની અગાધ શક્તિનો મહિમા મુક્તકંઠે ગાયો. નગરવાસીઓ,

રાજા તથા મંત્રીઓ સંતુષ્ટ બન્યા અને સાધ્વીજીને દ્રવ્ય તથા ભાવથી વન્દન કર્યું.

આ પ્રસંગને જોવા માટે આકાશમાં રહેલા દેવો તથા દેવીઓએ બુલંદ અવાજે શિયલધર્મપૂર્ણ સાધ્વીજી મ. નો જય જયકાર કરતાં કહ્યું કે-હે માનવો! તમને સુખ શાન્તિ અને સમાધિ જોઈતી હોય તો?

(૧) નારી શક્તિનું અપમાન કદિ પણ કરશો નહિ.
(૨) તેના સંયમ અને સદાચાર પાલનમાં બે ધ્યાન રહેશો નહિ.
(૩) તેમનાં હૃદયને ગરીબ, લાચાર કે પરાધીન પણ રહેવા દેશો નહિ.
(૪) અને નારીની આંખમાંથી પાણી પણ ટપકવા દેશો નહિ.

કેમકે :- જે ઘરમાં, સમાજમાં સ્ત્રીની આંખમાંથી પાણી ટપકે છે, ભૂખ તરસ, ઔષધ અને રહેઠાણ વિના દુ:ખી જીવન જીવે છે, પેટ ભરવા ખાતર પોતાનું શરીર બીજાને આધીન કરે છે તે દેશ, સમાજ કે કુટુંબ કોઈ કાળે પણ પોતાની આબાદી પ્રાપ્ત કરી શકતો નથી.

દેવ-દેવીઓ ગયા અને સુનન્દા સાધ્વીજી મહરાજનું દયાપૂર્ણ જીવન દેશના ઈતિહાસમાં સુવર્ણાક્ષરે લખાઈ ગયું.

જૈન શાસનમાં પશુ, પક્ષી જેવા તિર્યંચ જીવોને માટે પણ દેશવિરતિ ધર્મનો નિષેધ નથી. આત્મામાં જાગૃતિ આવી ગઈ હોય તો તિર્યંચ પ્રાણી પણ પાપોના માર્ગને સ્થગિત કરી વ્રતધારી બની શકે છે. હાથીનો અતૃપ્ત વાસનાનો નશો ઉતર્યો અને કેવળજ્ઞાનની કેડી પર આવવાની સરળતા થઈ. અત્યારે તો મૃત્યુ પામીને દેવ બન્યો છે.

'જય હો નારી નારાયણીનો'

કીડી
આગની બાજુમાં
ઉભીય રહેતી નથી.
આપણે
વરસોથી
ક્રોધની આગને
સાથે જ રાખીને
જીવન જીવી રહ્યા છીએ...
આશ્ચર્ય છે ને?

સુખી માણસની આંખમાં
આંસુ જોઈને હું સ્તબ્ધ થઈ ગયો...!
'અલ્યા! રડવાનું કારણ?'
'શું કહું?
મારા ઘરમાં આવનાર
પ્રત્યેક માણસ મારી પાસે
જે જે ચીજો છે એની સામે
જુએ છે, પણ
મારી સામે તો કોઈ જોતું જ નથી!'

★

માનવતાની
વકીલાત કરનારા
પૂર્વકાળના
માણસો ક્યાં અને
કેવળ
પૈસાને જ નજરમાં
રાખીને અસીલની
વકીલાત કરનારા
આજના વકીલો ક્યાં!!

★

આમંત્રણ આપવા છતાં
જમણવારમાં ગેરહાજર
રહેલા મહેમાનોને
એના ઘરે મિઠાઈ પહોંચાડવામાં
આવે છે...જ્યારે
એ જમણવારમાં હાજર રહેલા
ભિખારીઓને એઠું-જુઠું
આપવામાં નથી આવતુ!
આશ્ચર્ય છે ને?

—મુનિ રત્નસુંદરવિજયજી

साहित्य मनिषी आचार्य देव श्रीमद्‌विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी द्वारा लिखित / सम्पादित उपलब्ध साहित्य आज ही मंगवाइये।

* नमो मन से नमो तन से — पांच रूपये
  नवकार पर आधारित प्रवचनों का सुन्दर संकलन (द्विरंगी मुद्रण)
* जीवन ऐसा हो — पांच रूपये
  (मार्गानुसारी के पेंतीस गुणों का वर्णन, द्विरंगी आकर्षक मुद्रण)
* जयन्तसेन सतसई — चार रूपये
  (विविद विषयों पर ७०७ दोहों का संकलन)
* ज्योतिष प्रवेश — सात रूपये
  (ज्योतिष सम्बन्धी प्रारंभिक जानकारी)
* नवकार गुण गंगा — पांच रूपये
  (नवकार पर सुन्दर / भाववाही स्तवनों का संकलन)
* चिर प्रवासी — चार रूपये
  (जीवन यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर उपदेशात्मक मुक्तक)
* गुरूदेव पुष्पांजलि — तीन रूपये
  (श्रद्धेय गुरूदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी के भक्ति गीतों का संग्रह)
* तीर्थ - वंदना — तीन रूपये
  (विविध तीर्थों के मूलनायक भगवंतों के स्तवन)
* भगवान महावीर ने क्या कहा ? (हिन्दी/गुजराती) — बीस रूपये
  (आगम ग्रन्थों से चुनी हुई २५० सुक्तियों पर सुन्दर विवेचन)
* भक्ति सागर — दो रूपये
  (स्तवनों का संकलन)
* अरिहंते शरणं पवज्जामि (हिन्दी/गुजराती) — दस रूपये
* यतीन्द्र मुहुर्त दर्पण — इक्कावन रूपये
  - (मुहूर्त संबंधी वृहद् संकलन)
* भक्ति प्रदीप (स्तवन) — दो रूपये
* हेम मुक्ति स्वयं सुधा (गुजराती) — पांच रूपये
* नवकार आराधना (हिन्दी / गुजराती) — पांच रूपये
  (नवकार पर मननीय प्रवचन)
* अष्टान्हिका व्यख्यानम् — दस रूपये
  (पर्युषण व्याख्यान)
* जिनेन्द्र पूजा संग्रह (वृहद) (गुजराती) — इक्कीस रूपये
  (विविध पूजायें रंगीन चित्रो के साथ)
* जिनेन्द्र पूजा संग्रह (लघु) — दस रूपये
  (विविध पूजाये रंगीन चित्रो के साथ)
* पंचप्रतिक्रमण विधी सह (पॉकेट साईज) — दस रूपये
  (प्रतिदिन आवश्यक क्रिया में उपयोगी)

उपरोक्त पुस्तकें मंगवाने हेतु मूल्य के साथ प्रति पुस्तक पोस्टेज एक रूपया जोड़कर मनीआर्डर निम्नांकित पते पर भिजवायें —

शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका, थाने - ४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक व्यय चुकाये बिना भेजने की अनुमति प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

क्या आप जानते हैं?

कि आज के प्रचलित टूथपेस्टों में उपयोग में लाये जाने वाले फॉस्फेट और जिलेटिन का निर्माण मृत प्राणी की हड्डिओं से किया जाता है? कई लोगों को इस का पता नहीं है. मृत प्राणी की हड्डियों का इस्तेमाल जिस टूथपेस्ट या टूथ पाउडर में किया जाता हो, इसको उपयोग में लाना उचित नहीं है.

अमर टूथपेस्ट — टूथपाउडर में

किसी भी अभक्ष्य पदार्थ का इस्तेमाल नहीं होता. आयुर्वेदिक जड़ी बुट्टियों का इन में बहुत ही सावधानीभरा उपयोग किया जाता है

आयुर्वेदिक
अमर
टूथपेस्ट-टूथपाउडर

नये युग की हर्बल-लहर जो दांतों को निरोगी, मज़बूत और चमकता रखे.

अमर टूथपाउडर, एक्स्ट्रा स्ट्राँग के नियमित उपयोग से पायोरिया तक के दांत और मसूड़ों के विविध रोग मिट सकते हैं. और श्वास की दुर्गंध भी दूर होती है.

आदर्श दंत-रक्षक — रेग्युलर टूथपेस्ट. **रु. ७.५०**
आदर्श दंतरोग-निवारक — स्ट्राँग टूथपेस्ट. **रु. ८.५०**
पायोरिया के इलाज के लिए आदर्श — एक्स्ट्रा स्ट्राँग टूथपाउडर. **रु. ११.५०**

भारत का एकमात्र अहिंसक आयुर्वेदिक उत्पादन.

निर्माता: स्वामि औषधालय प्रा. लि., ४९७, एस.वी.पी. रोड़, बम्बई-४०० ००४.
फैक्ट्री: ४६४, न्यू जी.आई.डी.सी., कतारगाम, सुरत-३९५ ००८.

सम्पादक : जे. के. संघवी, अ. भा. श्रो. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स-थाने में मुद्रित ।